भारतीय क्रांति के नेता व भाकपा(माओवादी) के पोलित ब्यूरो सदस्य कामरेड देवकुमार सिंह (अरविंद, सुजित, निशांत) अमर रहें!

तुमिरगुंडा–कसनूर शहीदों को लाल–लाल सलाम!

विजेंदर, डोलेश, वासुदेव, महरी, मंगली, जन्नी, शामको, शंकर, रैसू

शांति, जूरिया, जेन्नी, दुल्सा, दानू, पालू, रानू, बिच्चू, सुक्की, पूलो

गुड्डू, बन्नी, तुलसी, वेडदे, मूको, धर्मू, बाली, बाली, मैनी, बुज्जी

सोनी, लक्ष्मण, मंगु, इरपा, मंगेश, रासो, अनिता, बुज्जी, रासो, नुस्से

लोदेड–आईपेटा शहीदों को लाल–लाल सलाम!

कमली, अनिता, कमली, कोसी, मासे, सुखमन, कमला

परिशिष्ट

प्रभात

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख–पत्र
वर्ष–31 अंक–2 का परिशिष्ट अप्रैल–जून 2018 सहयोग राशि–15 रुपए

कसनूर–तुमिरगुंडा अमर शहीदों को लाल–लाल सलाम!

शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने जंग–ए–मैदान में आगे बढ़ेंगे!

22 अप्रैल को महाराष्ट्र के सी–60 कमांडों व सीआरपीएफ ने मिल कर एक भीषण नरसंहार को अंजाम दिया. उस दिन इंद्रावती नदी के किनारे स्थित बोरिया कसनूर–तुमिरगुंडा गांवों के बीच के जंगल में ठहरे सीपीआई(माओवादी) व पीएलजीए योद्धाओं पर सरकारी सशस्त्र बलों ने क्रूर हमला किया. अपने सूचनातंत्र के माध्यम से क्रांतिकारियों की मौजूदगी की जानकारी पाने वाले सरकारी बलों ने सुनियोजित तरीके से तीनों तरफ से गुरिल्ला योद्धाओं का घेराव किया. तीनों ओर फैले पहाड़ों पर पांच कंपनियों के बल तैनात हुए. जबकि इंद्रावती नदी की ओर पुलिस बलों की तैनाती नहीं हुई. अचानक हुई भीषण गोलीबारी का ढ़ाई घंटों तक कामरेड्स मुकाबला करते रहे. इस दौरान 14 कामरेडों ने अपनी अनमोल जानों की कुरबानी दी. कुछ कामरेड उस गोलीबारी से बाहर निकलने के लिए नदी में कूद गए थे. उन पर भी पुलिस बलों ने अंधाधुंध गोलीबारी की. इस गोलीकांड में 40 कामरेडों जिनमें 8 जनसंगठन व मिलिशिया सदस्य शामिल थे, की शहादत हुई. शहीदों में कामरेड्स राउत विजेंदर (श्रीनू–दक्षिण गढ़चिरौली डिविजनल कमेटी सचिव), डोलेश आत्रम (साईनाथ – डिविजनल कमेटी सदस्य), वासुदेव आत्रम (नंदू, विक्रम – डिविजनल कमेटी सदस्य), महरी वड्डे (लता एरिया कमेटी सचिव), मंगली पद्दा (शांता – अहिरी एरिया कमांडर), जन्नी मट्टामी (लिम्मि – एरिया कमेटी सदस्या), शामको झूरे (जमुना – पीएल–7 की उप कमांडर), शंकर कोण्डागोरला (संदीप–एरिया कमेटी सदस्य), रैसू नरोटि (राजेश – एक्शन टीम कमांडर), शांति गावडे (ललिता – पीएल–14 की उप कमांडर), जूरिया वेडदा (प्रदीप, विकास – पेरिमिल एरिया कमांडर), जेन्नी तलंडी (चंद्रकला – अहेरी एरिया कमेटी सदस्य), दुल्सा नरोटि (नागेश – पीएल 14 का पार्टी कमेटी सदस्य), दानू उयका (कार्तिक – पेरिमिल एरिया कमेटी सदस्य), पाली माहका (राधा – अहेरी एरिया कमेटी सदस्य), रानू नरोटि (श्रीकांत – गार्ड), बिच्चू गावडे (सन्नू – पीएल–7 का सदस्य), पोटामी सुक्की (रेश्मा – पीएल–14 की सदस्या), पूलो कोडापे (सुनीता – अहेरी दस्ते की सदस्या), गुड्डू लक्कडा (संजय – अहेरी दस्ते का सदस्य), बन्नी गावडे (जयशिला–अहेरी दस्ते की सदस्या), तुलसी धुर्वा (रुक्मति – पीएल–14 की सदस्या), वेडदे कोवासी (रजनी – पीएल–14 की सदस्या), मूको परसा (रेश्मा – पीएल–14 की सदस्या), धर्मु पुंगाटि (तिरुपति–पेरिमिल दस्ते की सदस्य), बाली लेकामी (जानकी – पीएल–7 की सदस्या), बाली मडावी (अनिता – पेरिमिल दस्ते की सदस्या), मैनी मडावी (मंदा – अहेरी दस्ते की सदस्या), पूनेम बुज्जी (क्रांति – पीएल–7 की सदस्या), सोनी (पीएल–14 की सदस्या), लक्ष्मण गोटा (अजय – पेरिमिल दस्ते का सदस्य) और साईनाथ (विजय – अहेरी दस्ते का सदस्य) मिलिशिया व जनसंगठन के कॉमरेड्स मंगू लेबडु आत्रम, इरपा वत्ते मडावी, मुंगेश चुण्डु मडावी, रासो पोचा मडावी, अनिता देवू गावडे, बुज्जी कर्वे उसेंडी, रासो चुक्कु मडावी और नुस्से पेडू मडावी शामिल हैं. इन तमाम शहीदों को प्रभात विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है और पाठकों का आह्वान करता है कि शहीदों के अधूरे अरमानों को पूरा करने के लिए वे शपथ लें. जनयुद्ध में आगे बढ़ कर इस क्रूर दमन का करारा जवाब दें.

एक ही जगह में इस भीषण नरसंहार को अंजाम देने वाले पुलिस ने मीडिया द्वारा यह झूठी कहानी फैलायी कि तीन अलग–अलग जगहों में हुई मुठभेड़ों में 40 माओवादियों की मौत हुई. सच्चाई को छुपाने के लिए इस पूरे इलाके को पुलिस ने चार दिन तक अपने कब्जे में लिया. पत्रकार या मानवाधिकार संगठनों को इस इलाके में कदम नहीं रखने दिया.

देश के संसाधनों को देशी–विदेशी कार्पोरेट घरानों को कौड़ियों के भाव पर बेचने के लिए केंद्रीय व विभिन्न राज्यों की सरकारें जी तोड़ कोशिशें कर रही हैं. लेकिन भाकपा(माओवादी) के नेतृत्व में देश में जारी जनयुद्ध व जनांदोलन की वजह से ये कोशिशें सफल नहीं हो पा रही हैं. इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन पर दिन–ब–दिन दमन बढ़ाया जा रहा है. समाधान (2017–22) के नाम पर फिलहाल जारी दमन में दंडकारण्य भर में कई बड़ी मुठभेड़ें जारी हैं. इसी का हिस्सा है, कसनूर–तुमिरगुंडा नरसंहार. गढ़चिरौली इलाका कई अनमोल प्राकृतिक संपदाओं का भंडार है. सूर्जागढ़ जैसे खदानों को खोलने के लिए जारी कोशिशों को यहां का आंदोलन नाकाम कर रहा है. इसीलिए कई सालों से यहां दिन–ब–दिन दमन बढ़ाया जा रहा है. इसी सिलसिले में इस नृशंस हत्याकांड को अंजाम दिया गया. चाहे जितना भी दमन का प्रयोग क्यों न हो क्रांतिकारी आंदोलन कभी नहीं रुकेगा. जब तक जनता की समस्याएं जारी रहेंगी आंदोलन आगे बढ़ता ही रहेगा.

इस नरसंहार के खिलाफ छात्रों, विभिन्न सामाजिक संगठनों व मानवाधिकार संगठनों ने मिलकर देश के कई जगहों पर धरना–प्रदर्शनों द्वारा अपना जोरदार विरोध दर्ज किया. देश की भविता के लिए संचालित क्रांतिकारी आंदोलन के ऊपर जारी दमन के खिलाफ उठी इस आवाज को और बुलंद करना एवं जनांदोलन को व्यापक पैमाने पर निर्माण करना देश के हर जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है.

कामरेड राउत विजेंदर (श्रीनू)

कामरेड राउत विजेंदर ने संघर्ष विरासत वाले तेलंगाना राज्य, वरंगल जिला, चिट्याल मंडल, चल्लागरिगा गांव के एक दलित परिवार में जन्म लिया था. हालियम्मा और नर्सिह्मा रामुलु के तीन बेटों में कामरेड श्रीनू मझोले थे. शहादत के वक्त कामरेड श्रीनू की उम्र 47 वर्ष थी.

चल्लागरिगा गांव क्रांतिकारी लड़ाई का गढ़ माना जाता है. उसने चालीस वर्ष से क्रांतिकारी आंदोलन को आंख की पुतली समान रक्षा करते हुए आधा दर्जन योद्धाओं को क्रांति के लिए समर्पित किया.

उस गांव में तत्कालीन भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के नेतृत्व में कामरेड्स गाजर्ला सारन्ना, भास्कर और नल्ला वसंत आदि शहीदों की प्रेरणा से क्रांतिकारी किसान मजदूर संगठन का गठन हुआ. इस संगठन के बैनर तले बड़े पैमाने पर इकट्ठी होने वाली जनता ने उस गांव के नर्सिह्मा रेड्डी, गूलम समदानी, लंबाडा गोप्या नायक, पटेल श्यामराव और रविंदर राव आदि के जुल्म और अत्याचारों के खिलाफ जबर्दस्त संघर्ष छेड़ा था. इस सामंती विरोधी संघर्ष ने ब्राह्मण, रेड्डी और लंबाडा जमींदारों को गांव से भगा दिया. कुछ लोगों की जमीन पर झंडे गाढ़ कर उस जमीन को भूमिहीन गरीब किसानों के बीच बांट दिया.

1990–92 के बीच क्रांतिकारी आंदोलन के सफाया के मकसद से गांवों पर क्रूर हमलें शरू हुए. चल्लागरिगा गांव की जनता इस कठिन समय में आंदोलन के पक्ष में अडिग रही. चिट्याल दस्ते के उन्मूलन के लक्ष्य से दुश्मन द्वारा संचालित कार्डन एंड सर्च हमलों के बीच में जनता ने दस्ते को अपनी आंखों की पुतली समान बचा लिया.

इस पृष्ठभूमि में स्वाभाविक रूप से ही कामरेड विजेंदर 1994–95 में क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति आकर्षित हो गए. कामरेड विजेंदर के पिता भारत की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हुआ करते थे. घर के जनवादी माहौल ने भी कामरेड विजेंदर को क्रांतिकारी बनने में कुछ हद तक मददगार साबित हुआ. जब वे अपने गांव में 10वीं कक्षा में पढ़ते थे, कामरेड्स कलिकोटा शंकर, बयगानि श्रीनू और पेरुमांडला राजेंदर, जो बाद में शहीद हुए थे, के साथ उनका परिचय हुआ, जिसकी वजह से कामरेड विजेंदर रैडिकल छात्र संगठन का सक्रिय कार्यकर्ता बने थे. 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ कर वे खेती व घरेलू काम में मां–बाप का हाथ बंटाने लगे थे. साथ में संगठन के क्रियाकलापों में भी भाग लेते थे. इस दौरान कामरेड विजेंदर ने न सिर्फ अपने घर बल्कि अपनी बस्ती को क्रांतिकारी राजनीति के केंद्र के रूप में तब्दील किया. पार्टी के संदेशों व आह्वानों को पोस्टर व बैनरों के जरिए जनता में पहुंचाते थे. अच्छे कलाकार होने की वजह से क्रांति के प्रति जनता को आकर्षित करने के लिए उन्होंने कला को भी अपना माध्यम बना दिया.

1995 में जब क्रांतिकारी आंदोलन पर दमन और बढ़ गया, उससे डर कर कुछ नेताओं ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया. इस कठिन परिस्थिति में पार्टी के साथ कामरेड विजेंदर का रिश्ता एक साल तक टूट गया. इस मौके का फायदा उठाने वाली जन विरोधी ताकतों ने फिर से सिर उठाया. 1996 में पार्टी के साथ उनका संबंध तब बहाल हो गया जब चिट्याल एरिया के रैडिकल युवा मंच के सचिव कामरेड कंदिकोंडा सुधाकर के साथ उनका परिचय हुआ. बाद में जन विरोधियों व गद्दारों के खिलाफ जन अदालत संचालित करके उन्हें सजा देने में, ध्वस्त हुए संगठन को फिर मजबूत करने में कामरेड विजेंदर की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी. 1997 में पार्टी के आह्वान को स्वीकार करते हुए वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए थे. चिट्याल एरिया रैडिकल छात्र संगठन के सचिव की जिम्मेदारी उन्होंने संभाली. श्रीकांत के नाम से छात्रों में उनका परिचय हुआ था. सरकारी जन विरोधी नीतियों, शिक्षा के निजीकरण, छात्रावासों को पुलिस कैंपों के रूप में तब्दील करने, फर्जी मुठभेड़ों में छात्र नेताओं की हत्या करने, छात्रावासों में अधिकारियों के भ्रष्टाचार के विरोध में और छात्रों की सुविधाओं से संबंधित कई मांगों को लेकर उन्होंने छात्र–छात्राओं के कई जुझारू संघर्षों का नेतृत्व किया. उस दौरान तीव्र दमन के कारण न सिर्फ अपने गांव बल्कि पूरे क्षेत्र में वर्ग संगठनों को धक्का पहुंच गया. कामरेड कंदिकोंडा सुधाकर के साथ गुप्त रूप से गांव–गांव में घूमते हुए फिर संगठन बनाने व मजबूत करने में उन्होंने अपना योगदान दिया. उस दौरान कई वर्ग दुश्मनों को सजा देने में उनकी भूमिका रही.

नयी उदारवादी नीतियों के चलते पैदा हुए कृषि संकट की वजह से 1996–97 में आंध्रप्रदेश में जब किसानों की आत्महत्याओं का सिलसिला शुरू हुआ, सरकारी नीतियों के खिलाफ पार्टी के नेतृत्व में कई किसान आंदोलनों का आयोजन हुआ. उन आंदोलनों में अपने एरिया के किसानों को जोड़ने में कामरेड विजेंदर का योगदान रहा. शराब बंदी आंदोलनों में महिलाओं को बड़े पैमाने पर एकजुट करने में

भी उनकी भूमिका रही. 1998 में जब कामरेड कंदिकोंडा सुधाकर की फर्जी मुठभेड़ में हत्या हुई थी, इसके विरोध में चल्लागरिगा और मुचिनिवर्ती गांव की जनता ने चिट्याल पुलिस स्टेशन का 10 घंटों तक घेराव किया. जब पुलिस ने लाश को परिजनों को सौंपने से इनकार किया, तो चिट्याल और मोगुल्लापल्ली के दोनों दरोगों को जनता ने चप्पलों से मारा. आखिरकार जनता लाश लेने में सफल हुई. इस जुझारू आंदोलन का कामरेड श्रीनू ने नेतृत्व प्रदान किया. 1999 में चिट्याल मंडल केंद्र में एक दलित युवति के साथ उच्च जाति के लोगों और पुलिस हवलदार ने मिलकर सामूहिक अत्याचार किया. इसके खिलाफ चिट्याल मंडल की महिलाओं, दलितों और दलित संगठनों को एकजुट करके आंदोलन का संचालन करने, जन संगठन के नेतृत्व में जन अदालत का आयोजन करके अपराधियों को सजा दिलाने में कामरेड श्रीनू की मुख्य भूमिका रही. 1999 में चल्लागरिगा गांव के एक दलित युवक जो पड़ोसी गांव के जमींदार का नौकर हुआ करता था, पर गलत आरोप लगा कर जमींदार ने उसकी हत्या की. इस हत्या के खिलाफ आसपास के गांवों के दलित और अन्य तबकों के लोगों को गोलबंद करके आंदोलन किया गया. अपराधियों को सजा दिलाने का आश्वासन कलेक्टर से जब तक नहीं मिला, तब तक चक्काजाम किया गया. इस आंदोलन के संचालन में कामरेड श्रीनू की भागीदारी रही.

मेरे पिता, हमारी हिम्मत हैं! इन बुरे दिनों में जब आठ वर्षीय बच्ची के साथ भी शासक वर्गीय पार्टियों के नेता यौन अत्याचार कर रहे हैं, अकेली नानी के पास रह कर पढ़ने वाली मुझ जैसे लोगों के लिए मेरे पिता जैसे लोग स्फूर्ति के स्रोत हैं.

– कामरेड श्रीनू की 15 वर्षीय बेटी प्रीती के भाषण से

कामरेड श्रीनू भीषण दमन के बीच में ही जनता के साथ जीवंत संबंध बनाए रखते हुए कई आंदोलनों का नेतृत्व करते हुए एक जन नेता के तौर पर उभर कर आए. वह किसी भी समस्या का सहन के साथ जनता को समझाते हुए हल किया करते थे.

लेकिन इसी तरह कामरेड विजेंदर का राजनीतिक जीवन अविच्छिन्न आगे नहीं बढ़ पाया. बढ़ते दमन का दृढ़ता पूर्वक सामना करने में वे अशक्त हो गए थे. राजनीतिक रूप से कमजोर होकर उन्होंने दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण किया. उस दौरान उन्होंने 6 माह तक जेल जिंदगी बिताई. जेल में उन्होंने अपनी गलती मानते हुए जेल कमेटी के सामने अपनी आत्मालोचना पेश की. जेल से ही पार्टी को पत्र लिखा. उनकी ईमानदारीपूर्वक आत्मालोचना को मानने वाली जेल कमेटी ने उन्हें जेल में शिक्षक की जिम्मेदारी सौंपी. राजनीतिक बंदियों द्वारा संचालित जेल संघर्ष में उन्होंने भाग लिया. जेल से रिहा होने के तुरंत बाद वह क्रांतिकारी आंदोलन में फिर शामिल हो गए.

1999 में वे फिर पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. उसके तुरंत बाद उन्हें कामरेड कडारि रामुलु (रवि), जो 2006 में एओबी में काम करते हुए शहीद हो गए, को पढ़ाने की जिम्मेदारी दी गई. 1999 से 2002 तक कडारि रामुलु के शिक्षक व गार्ड की जिम्मेदारी उन्होंने निभाई. उसी दौरान उनके कामकाज, अनुशासन और क्षमता के मुताबिक संबंधित पार्टी कमेटी ने उन्हें पीपीसी स्तर की पदोन्नति दी. गार्ड व शिक्षक जिम्मेदारी निभाते हुए ही दो वर्ष तक हथियार बनाने के क्षेत्र में भी उन्होंने अपना योगदान दिया.

2003 में उनका तबादला गढ़चिरौली में हुआ. तब से लेकर शहादत तक के 15 वर्ष की लंबी समयावधि के दौरान गढ़चिरौली आंदोलन के उतार–चढ़ाव में वे दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते रहे. वे सिरोंचा, अहेरी, पेरिमिल, गोमनी, भामरागढ़ आदि क्षेत्रों में जनता और कैडर के प्यारे नेता बन गए. 2005 तक वे सिरोंचा एरिया में कार्यरत थे. जब सीआरबी के मार्गदर्शन के अनुसार सिरोंचा एरिया को तेलंगाना राज्य में मिला लिया गया, कामरेड श्रीनू अहेरी एसी सदस्य बने थे. 2006 की आखिरी में सिरोंचा एरिया को फिर गढ़चिरौली में मिला लिया गया. इसके बाद वे पुनर्गठित सिरोंचा एसी के सचिव बने थे. बाद में विस्तार के लिए गढ़चिरौली डीवीसी द्वारा किए गए निर्णय पर अमल करते हुए गोमनी एलओएस के साथ रहते हुए पेरिमिल एसी का मार्गदर्शन दिया. 2007 में कामरेड श्रीनू ने अहेरी–सिरोंचा का मार्गदर्शन दिया. इसी दौरान कुछ लोगों की गद्दारी, पार्टी की निधि की चोरी, ठेकेदार से पैसा खाने का भ्रष्टाचार – ये सब मिल कर डिविजन में बेहद प्रतिकूल माहौल बन गया. चूंकि एक गद्दार के साथ पूर्व के उनके दोस्ताना व्यवहार के कारण उन पर भी शक पैदा हुआ था. कामरेड श्रीनू ने इन प्रतिकूलताओं का प्रतिबद्धता और क्रांति के ऊपर अटल विश्वास के साथ सामना करके जनता और कैडर का विश्वास जीत गया. 2008 में वे दक्षिण गढ़चिरौली डीवीसी सदस्य चुने गए. 2011 में और एक बार उनके निजी और राजनीतिक जीवन में संकट पैदा हुआ. उनकी जीवन साथी श्यामला के पार्टी के पैसे लेकर भागने की वजह से कामरेड श्रीनू बदनाम हुआ और 2012 में उन्हें अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ा. इसके बावजूद वे अडिग रहे. उन्होंने ठान ली कि वे अपने व्यवहार द्वारा ही अपनी ईमानदारी और प्रतिबद्धता को साबित करेंगे. आखिरकार उन्होंने उसे साबित भी करके दिखाया. जनता और कैडर के विश्वास जीतने की वजह से जनवरी, 2017 में दक्षिण गढ़चिरौली डीवीसी ने उन्हें अपना सचिव

कामरेड डोलेश आत्रम (साईनाथ)

कामरेड साईनाथ 32 वर्ष पहले गढ़चिरौली जिले के एटापल्ली तहसील, गट्टेपल्ली गांव के गरीब आदिवासी घर में पैदा हुए थे. बचपन में ही कामरेड साईनाथ के सिर से उनका पिता का साया उठ चुका था. कामरेड साईनाथ, उनकी मां और छोटी बहन का गुजर बसर उनके काका बिच्चू आत्रम के यहां हुआ था. बिच्चू आत्रम पेरिमिल एरिया के डीएकेएमएस रेंज कमेटी का हिस्सा बन कर एक जन नेता के रूप में उभरे थे. वे 2005 में शहीद हुए थे. कामरेड साईनाथ ने बूर्गि भगवंतराव आश्रम शाला में 7वीं की पढ़ाई हासिल की. काका के निधन के बाद पढ़ाई छोड़ कर घर संभालने में लग गए थे. पढ़ाई के दौरान जब वे छुट्टी पर घर आते थे, मिलिशिया के साथ रह कर प्रतिरोध व प्रचार कार्यक्रम में शामिल होते थे. क्रांतिकारी गतिविधियों में बढ़ती उनकी भागीदारी की जानकारी हासिल पेरिमिल थाना पुलिस ने उन्हें थाने में बुला कर डरा–धमकाने के अलावा उनके साथ मारपीट भी की. पुलिस मारपीट से उनके स्वाभिमान को धक्का पहुंच गया. बाद में उन्होंने ठान ली थी कि मरे या जिएं, क्रांतिकारी बनकर ही रहना चाहिए. उनके काका की कुरबानी से भी उन्हें प्रेरणा मिली.

2006 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. इसके पहले ही उन्होंने पार्टी सदस्यता हासिल की थी. दस्ते में भर्ती होने के बाद जुलाई, 2008 तक वे पेरिमिल दस्ते का हिस्सा रहे. जुलाई, 2008 से 2009 आखिरी तक डीवीसी सचिव के गार्ड की जिम्मेदारी निभाई. वहां से मुक्त होने के बाद उन्हें पेरिमिल एसी के सैनिक खुफिया विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. उस काम में उनकी कुशलता व क्षमता को देख कर 2010 में उन्हें डिविजन एमआई इंचार्च बनाया गया. 2012 तक उन्होंने उस काम को बखूबी संभाला.

जनवरी, 2013 में पेरिमिल एसी सचिव की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई. एरिया में मौजूद सभी निर्माणों को सक्रिय रूप में चलाने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की. क्रांतिकारी जनताना सरकार के निर्माण के लिए उन्होंने बेहद कोशिश की.

2010 में पेरिमिल एरिया कमेटी सदस्या कामरेड सरिता के साथ उनका प्रेम विवाह हुआ था. दोनों ने मिल कर उस एरिया संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी.

पश्चिम सब जोन में एसी/पीपीसी स्तर के चुनिंदा कामरेडों को डीवीसी/सीवाईपीसी स्तर में विकसित करने के लिए 2014 में नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (एलटीपी) आरंभ हुआ. एलटीपी के लिए चयन किए गए कामरेडों में कामरेड साईनाथ भी शामिल थे. एलटीपी के तहत संचालित कक्षाओं में भाग लेकर अपनी राजनीतिक व सैद्धांतिक समझदारी व चेतना को बढ़ाने के लिए उन्होंने बखूबी प्रयास किया. दिसंबर, 2015 में दक्षिण गढ़चिरौली

चुना था. कठिन परिस्थिति में एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठाने वाले कामरेड श्रीनु, उसे निभाने में खरा उतर रहे थे, इतने में उनकी शहादत हुई.

सैनिक मोर्चे में भी कामरेड श्रीनू का योगदान रहा. 1997 में गश्त पर आई पुलिस पर उन्होंने ग्रेनेड विस्फोट किया. उसी वर्ष कोडवटंचा गांव के एक गुंडे के ऊपर हमला करके उसका सर्विस रिवाल्वर जब्त किया. 2001 में आदिलाबाद जिले में, टीडी कैंप के ऊपर दो बार दुश्मन द्वारा हमले किए गए. उन हमलों का अन्य कामरेडों के साथ कामरेड श्रीनू ने भी वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया. उन्होंने न सिर्फ अपने कमांडर बल्कि टीडी सामान को बचाने में मुख्य भूमिका निभाई.

कामरेड श्रीनू की वैवाहिक जिंदगी सटीक नहीं चली. 2002 में टीडी यूनिट में काम करते समय उनका विवाह हुआ. 2005 में एक बच्ची पैदा हुई, जिसे कामरेड श्रीनू के परिवार को सौंप दिया गया. 2006 में उनकी पत्नी राजनीतिक व नैतिक रूप से पतित होकर भाग गयी. 2008 में कामरेड श्रीनू ने दोबारा शादी की. लेकिन वह भी पार्टी छोड़कर भाग गई. पार्टी कमेटी और नेतृत्व का सुझाव मान कर उन्होंने 2016 में कामरेड शांता के साथ फिर शादी की. उनकी इस शादी को ज्यादा वक्त नहीं हुआ कि दोनों ने जंग–ए–मैदान में एक ही साथ अपनी जान कुरबान की.

कामरेड श्रीनू स्नेहिल व हंसमुख थे. उनके चेहरे पर मुस्कान हमेशा चमकती थी. किसी को भी उनके साथ एक बार परिचय हुआ, तो उन्हें कभी नहीं भूल सकते थे.

कामरेड श्रीनू दो दशक के अपने क्रांतिकारी सफर में आंदोलन के सभी उतार–चढ़ावों में अडिग रहे. अपने राजनीतिक व निजी जीवन में आई सभी कठिनाईयों का उन्होंने दृढ़तापूर्वक सामना किया. उनका आदर्शों को ऊंचा उठा कर आगे बढ़ाएंगे.

कामरेड श्रीनू अमर रहें!

कामरेड वासुदेव आत्रम (नंदू, विक्रम)

गढ़चिरौली जिला, अहेरी तहसील, जिम्मलगट्टा रेंज अर्कापल्ली गांव के राजगोंड समुदाय में कामरेड वासुदेव पैदा हुए थे. अर्कापल्ली गांव का जमीन आंदोलन के लिए कड़ा संघर्ष करने का इतिहास रहा. इस इतिहास की विरासत लेकर गढ़चिरौली आंदोलन को मजबूत व उसका विस्तार करने के लिए इस गांव के कई वीर योद्धा जन युद्ध में शामिल हुए. इस गांव ने पहले ही कामरेड सडमेक सीतक्का, उनकी कोख से पैदा हुए कामरेड सडमेक साईनाथ (मंगेश), कामरेड श्रीकांत पोर्तेटी जैसे वीर योद्धाओं को क्रांति के लिए समर्पित किया.

कामरेड वासुदेव आत्रम ने कमलापुर, पेरिमिल शासकीय शालाओं और आश्रम शाला में 12वीं तक पढ़ाई हासिल की. पढ़ाई में वह होशियार थे. लेकिन क्रांतिकारी माहौल में पलने–बढ़ने की वजह से सरकारी नौकरी नहीं बल्कि क्रांति में शामिल होने का निर्णय उन्होंने लिया. बचपन से ही उनका इरादा था कि वे क्रांतिकारी बने. 2004 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. बाहरी स्कूलों में पढ़ाई हासिल कर आने वालों के लिए 2005 में डिविजन में पार्टी के मौलिक दस्तावेजों पर राजनीतिक कक्षाओं का संचालन हुआ. उनमें शामिल होकर कामरेड नंदू ने अपनी समझदारी को बढ़ाने की कोशिश की. 2005–06 दो वर्ष तक डीवीसी सदस्य के सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी उन्होंने निभायी. उसके बाद उनका तबादला कसनसूर एरिया में हुआ था. 2006 में कामरेड लता जो इसी हमले में शहीद हुई, के साथ उनका प्रेम विवाह हुआ. उसी वर्ष एरिया कमेटी सदस्य के रूप में उनकी पदोन्नति हुई.

विदर्भ के यावतमल और चंद्रपूर तक क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के मकसद से बनाए गए महाराष्ट्र परस्पेक्टिव पर अमल करने के लिए भेजे गए कामरेडों में वे एक थे. 2010 में उनका तबादला उस इलाके में हुआ था. हालांकि उस तबादले के प्रस्ताव का अनुमोदन करके वे उस प्रांत में गए थे, लेकिन कुछ ही दिनों में वहां काम करने में अपनी अशक्तता जताते हुए वे गढ़चिरौली वापस आ गए. गढ़चिरौली में चातगांव एसी के दायरे के पोटेगांव एलओएस कमांडर रह कर विशाल जनता को गोलबंद करने के लिए उन्होंने प्रयास किया. 2012 में चातगांव एसी के सचिव की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाई. 2013 में उन्हें दक्षिण गढ़चिरौली के अहेरी एसी सचिव जिम्मेदारी सौंपी गई. 2013 में हुए गोविंदगांव हमले में अहेरी एरिया के इंचार्ज डीवीसीएम, कमांडर सहित तमाम अहम कामरेडों की शहादत होने के बाद उस एरिया में फिर आंदोलन को खड़ा करने की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई. उस जिम्मेदारी को निभाते हुए ही उन्होंने कसनूर–तुमिरगुंडा हमले में शहादत को प्राप्त किया.

कामरेड नंदू अमर रहें!

डिविजन आंदोलन की समीक्षा करने के मकसद से डिविजन प्लीनम का आयोजन हुआ. उस प्लीनम में कामरेड साईनाथ डीविजन कमेटी सदस्य चुने गए. बढ़ती जिम्मेदारियों के मुताबिक अपने आप को विकसित करने के लिए उन्होंने भरपूर प्रयास किया.

सैनिक क्षेत्र में भी कामरेड साईनाथ का अच्छा–खासा अनुभव रहा. सैनिक नेतृत्व को विकसित करने के मकसद से दंडकारण्य में संचालित सैनिक नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर (एमएलटीपी) में शामिल होकर उन्होंने अपनी सैनिक क्षमता बढ़ाने की कोशिश की. ताडगांव, कारमपल्ली जैसे सफल सैनिक कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. पेरिमिल, तलवाडा एंबुशों के लिए उन्होंने खुफिया समाचार इकट्टा किया. उन कार्रवाइयों की योजना बनाने में भी उनकी भागीदारी थी. 2016 से पीएल–7 के पीपीसी सचिव के रूप में उन्होंने अपना योगदान दिया. पुलिस के साथ हुई कई मुठभेड़ों के दौरान प्रतिरोध करते हुए अपने दस्ते को उन्होंने सुरक्षित रिट्रीट कराया. कुडिकेल्ली गांव के पास हुई मुठभेड़ में अपनी जीवनसाथी कामरेड सरिता के शहीद होने के बावजूद उन्होंने हिम्मत के साथ अपने दस्ते को पुलिस के घेरे से बाहर निकाल लिया.

वे अपनी शहादत के कुछ ही दिनों पहले गठित ऑपरेशनल कमांड के डिप्युटि कमांडर थे. अपनी आखिरी लड़ाई कसनूर–तुमिरगुंडा में गुरिल्ला बलों का समन्वय करने के लिए उन्होंने कोशिश की. अपनी बंदूक की आखिरी गोली तक वह दुश्मन के साथ प्रतिरोध करते रहे.

क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा सामना किए गए कई उतार–चढ़ाओं में कामरेड साईनाथ अडिग रहे. आज के कठिन दौर में कामरेड साईनाथ को खोना गढ़चिरौली आंदोलन के लिए बड़ा ही नुक्सान है. उस नुक्सान को पूरा करने के लिए शहीदों की राह में आगे बढ़ेंगे!

कामरेड साईनाथ अमर रहें!

कामरेड महरी वड्डे (लता)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील, मिणुंगुरवंचा गांव के एक मध्यम किसान परिवार में कामरेड लता का जन्म हुआ. उन्होंने 7वीं कक्षा तक पढ़ाई की. 2002 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गई. उसके तुरंत बाद उनकी नियुक्ति नेतृत्वकारी सुरक्षा टीम में हुई. कुछ वक्त तक वहां काम करने के बाद उनका तबादला कुतुल एरिया में हुआ था. 2004 में वह फिर गढ़चिरौली जाकर वहां के पेरिमिल दस्ते की सदस्या बनी. 2005 की आखिरी में उनका तबादला उत्तर गढ़चिरौली में हुआ था. वहां कुछ ही वक्त तक वह सूरजागढ़ दस्ते में कार्यरत थीं. उसी वक्त कामरेड वासुदेव आत्रम, जो इसी घटना में शहीद हुए थे, के साथ उनका परिचय हुआ. कुछ दिनों बाद वह परिचय प्रेम में बदल गया. 2006 की आखिरी में उनकी शादी हुई. बाहरी स्कूलों में पढ़ाई हासिल कर आने वालों के लिए 2005 में डिविजन में पार्टी के मौलिक दस्तावेजों पर संचालित राजनीतिक कक्षाओं में शामिल होकर कामरेड लता ने अपनी समझदारी को बढ़ाने की कोशिश की. इसके अलावा डिविजन में संचालित मोबाइल अकादमिक स्कूल, मोबाईल पोलिटिकल स्कूल, सैनिक प्रशिक्षण शिविर, कार्यशालाओं, महिला विशेष बैठकों में शामिल होते हुए अपनी राजनीतिक चेतना विकिसित करने के लिए उन्होंने प्रयास किया.

2007 में चातगांव दस्ते के उप कमांडर की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई. वहां 2007 में निर्मित एरिया स्तर की जनताना सरकार के गठन में शहीद कामरेड्स रनीता, इंद्रा, पंकज और विक्रम के साथ कामरेड लता की भूमिका रही.

2012 में आयोजित उत्तर गढ़चिरौली डिविजन प्लीनम, 2015 में आयोजित दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन प्लीनम में शामिल होकर दोनों डिविजन आंदोलनों पर उन्होंने अपनी राजनीतिक समझदारी बढ़ा ली.

2010 में चातगांव एरिया की केएएमएस अध्यक्षा बनी. एरिया के क्रांतिकारी महिला आंदोलन का उन्होंने निर्देशन दिया. उस वक्त एरिया में पुलिस दमन व अत्याचारों के खिलाफ महिलाओं द्वारा जप्पी, कन्नेली, मर्काना आदि गांवों में कई जुझारू संघर्ष किए गए. खासकर मंगेवाडा गांव में महिलाओं ने अपने जोरदार प्रतिरोध के जरिए पुलिस बलों को भगा दिया. ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं को समझने व हल करने के लिए बुजुर्ग महिलाओं के साथ की गई बैठक का उन्होंने नेतृत्व प्रदान किया. क्रांतिकारी दिवसों के मौकों पर विशाल जनता में पार्टी के संदेश को पहुंचा दिया.

क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार 2013 में उनका तबादला दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन के पेरिमिल दस्ते में हुआ था. वहां व्यापक जनता को संगठित करने वह प्रयासरत थीं. 2015 में अहेरी एरिया में उनका तबादला हुआ. अहेरी एरिया कमेटी सदस्य रह कर वहां के आंदोलन को आगे ले जाने के लिए उन्होंने प्रयास किया. उनकी राजनीतिक, सांगठनिक व सैनिक क्षमता व समझदारी के तहत जनवरी, 2018 में उन्हें एरिया सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गयी. लेकिन उसके कुछ ही दिन बाद उन्होंने शहादत को पाया.

16 वर्ष के क्रांतिकारी जीवन में कामरेड लता ने आंदोलन के कई उतार–चढ़ावो को देखा. हर संदर्भ में वह आंदोलन में हिम्मत, साहस और दृढ़ विश्वास के साथ डटी रहीं.

कामरेड लता अमर रहें!

कामरेड मंगली पद्दा (शांता)

कामरेड शांता ने बीजापुर जिला, बैलाडीला पहाड़ के नीचे स्थित परालनार गांव में जन्म लिया. कामरेड शांता के दो भाई हैं. उनमें से एक उस एरिया के जन संगठन नेता हैं और फिलहाल वे जेल में हैं.

कामरेड शांता 2003 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गयीं. कुछ वक्त तक वह गंगालूर दस्ते में कार्यरत थीं. बाद में सीसी सुरक्षा टीम में उनकी नियुक्ति हुई, जहां दो साल वह कार्यरत थीं. उसी दौरान उस सुरक्षा टीम के तत्कालीन कमांडर कामरेड मंगेश के साथ उनका प्रेम विवाह हुआ था. 2005 में उन्होंने एक बच्ची को जन्म दिया.

2006 में दुधमुंही बच्ची को गोद में लेकर उन्होंने बस्तर के जंग–ए–मैदान से गढ़चिरौली के जंग–ए–मैदान में कदम रखा था. 2007 में अहेरी दस्ते की सदस्या बन कर उस एरिया की नेत्री कामरेड मीना जो, 2009 में शहीद हुई थीं, के साथ मिल कर दमन की वजह से कमजोर हुए क्रांतिकारी महिला संगठन को पुनःसंगठित करने के लिए कठिन परिश्रम किया. 2009 में उन्हें एरिया महिला संगठन की जिम्मेदारी सौंप दी गई. अहेरी एरिया कमेटी सदस्या

की हैसियत से उन्होंने उस जिम्मेदारी को संभाला.

2009 में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन में किए गए लाहेरी सफल हमले में डिविजन मिलिटरी कमांडर–इन–चीफ कामरेड मंगेश जो कामरेड शांता के जीवन साथी थे, शाहीद हुए. क्रांतिकारी दृढ़ संकल्प के साथ इस दुख से उबरने के लिए कामरेड शांता ने प्रयास किया.

कामरेड शांता ने अहेरी एरिया में कदम रखने के बाद अपनी बोली मुरिया गोंडी छोड़ कर अहेरी जनता की राजगोंड बोली में बात करना शुरू किया. कुछ ही दिनों में उस बोली पर पकड़ हासिल की. अहेरी एरिया की जनता के साथ उनका मेलमिलाप ऐसा हुआ करता था कि जैसा वह उसी एरिया में पैदा हुई हों. जनता ने कामरेड शांता को अपनी बेटी, बहू और नेता के रूप में स्वीकार किया. कामरेड शांता ने अहेरी एरिया के क्रांतिकारी आंदोलन को मजबूत व विस्तार करने के लिए 11 वर्षों तक दिन–रात बेहद मेहनत की.

उनकी बच्ची की परवरिश का दायित्व पार्टी पर ही छोड़ कर उन्होंने अपनी सांगठनिक जिम्मेदारी निभाने में पूरी तरह मग्न हो गई. उन्होंने अपनी एकलौती बेटी के बारे में नहीं बल्कि देश की करोड़ों बेटियों की सुनहरी भविता के लिए अपनी जिंदगी समर्पित की.

2009 में दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन की केएएमएस कार्यकारिणी सदस्य बन गई. 2010 में आयोजित केएएमएस के जोन अधिवेशन में भाग लेकर दंडकारण्य महिला आंदोलन के बारे में उन्होंने अपनी समझदारी बढ़ा ली. केएएमएस द्वारा संचालित कई कार्यशालाओं, राजनीतिक कक्षाओं में शामिल होकर अपनी राजनीतिक व सांगठनिक क्षमता बढ़ा ली.

सैनिक प्रशिक्षण शिविरों में शामिल होकर अपनी सैनिक क्षमता भी बढ़ा ली. 2013 में गोविंदगांव के पास दुश्मन द्वारा किए गए एंबुश जिसमें एरिया आंदोलन के लगभग सभी कामरेड्स शहीद हुए थे, से कामरेड शांता ने सुरक्षित निकल कर बचे–खुचे लोगों को समन्वय करने की कोशिश की. 2013 में ईंदूर के पास दुश्मन द्वारा किए गए हमले में वह बाल–बाल बच गईं. दुश्मन द्वारा किए गए हमलों व मुठभेड़ों का उन्होंने हिम्मत से सामना किया.

2016 में उन्होंने अहेरी दस्ते के कमांडर की जिम्मेदारी उठा ली. उसी वर्ष कामरेड श्रीनू के साथ उनकी शादी हुई. कसनूर–तुमिरगुंडा हमले में जब कामरेड श्रीनू को गोली लगी, तब उनका हाथ पकड़ कर उन्हें सुरक्षित निकलाने के लिए कामरेड शांता ने कोशिश की. उसी समय कामरेड शांता को भी गोली लग कर वह शहीद हुईं.

कामरेड शांता अमर रहें!

कामरेड जन्नी मट्टामी (लिम्मि)

कामरेड लिम्मि गढ़चिरौली जिले के एटापल्ली तहसील के गांव रामन में पैदा हुईं. मां लूली व बाप फकरी की पांच बेटियों में वह दूसरी थीं. घरेलू व खेती संबंधित हर काम में वह मां–बाप का हाथ बंटाती थीं.

उसी क्रम में कामरेड लिम्मि क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति आकर्षित हुईं. बीस वर्ष पहले रामन गांव में तीन लोगों के साथ बनी विकास कमेटी में कामरेड जन्नी भी एक सदस्या थी. बाद में वह केएएमएस की सक्रिय कार्यकर्ता बनीं. ब्लाऊज पहनने के अधिकार से आदिवासी महिलाओं को वंचित करने वाली, पीढ़ियों से चली आ रही रीति रिवाजों के खिलाफ आवाज उठाते हुए कामरेड लिम्मि ने ब्लाऊज वितरण अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया.

मिलिशिया प्रशिक्षण में भी वह सक्रिय रूप से शामिल होती थीं. 2001 में जब पहली बार टीसीओसी अभियान लिया गया था, कामरेड लिम्मि उसमें शामिल होकर गट्टा पुलिस थाने के ऊपर फायरिंग करने गई थीं. रोड–पुलिया के कामों को बंद कराने, दारू तैयारी पर प्रतिबंध लगाने और वनोपजों के भाव बढ़ाने के लिए आयोजित आंदोलनों में उन्होंने भाग लिया.

आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी के मुताबिक 2001 में उन्हें अंशकालीन पार्टी सदस्यता दी गई. गांव की सेल सदस्य बन कर उसी वक्त बनी क्रांतिकारी जनताना सरकारों का नेतृत्व किया. उनके नेतृत्व में उनके गांव में एक छोटा तालाब का निर्माण हुआ. इस तरह गांव में सक्रिय रूप से काम करते हुए मार्च, 2004 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनीं.

उन्होंने कुछ दिन पेरिमिल दस्ते में काम किया. उस समय पार्टी की आत्मगत शक्तियां कम थी. इस कारण जब कभी भी कोई मुख्य सुरक्षा काम सामने आता, तो कामरेड लिम्मि का नाम सबसे पहले लिया जाता था. ऐसे में कामरेड लिम्मि ने एक वर्ष तक घायल साथियों की सुरक्षा में अपनी सेवाएं प्रदान की थीं. उसके बाद दो वर्ष तक उन्होंने तकनीकी विभाग की सुरक्षा जिम्मेदारी संभाली. 2006 में उन्हें गट्टा एलओएस के केएएमएस की जिम्मेदारी सौंपी गई. 2008 में उन्हें भामरागढ़ एरिया कमेटी में लिया गया. बाद में कामरेड लिम्मि ने गट्टा एलओएस की उप

कमांडर बन कर मिलिशिया को नेतृत्व प्रदान किया. सूर्जागढ़ और दमकोडी लौह खदान के ठेकेदारों के ऊपर की गई कार्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया. मिलिशिया कामरेड्स के साथ मिल कर कई साबोटेज (तोड़फोड़) कार्रवाइयों को अंजाम दिया. मिलिशिया को हथियारबद्ध करने के मकसद से संचालित भरमार प्रोजेक्ट शिविर की जिम्मेदारी उन्होंने संभाली. 2011 में दारू व नशा चीजों के खिलाफ आयोजित आंदोलन में वह सक्रिय भागीदार रहीं.

2014 में वह भामरागढ़ एरिया डीएकेएमएस की अध्यक्षा बनी थीं साथ ही डिविजन डीएकेएमएस सदस्या बनी थीं. 2016 में उनका तबादला पेरिमिल एरिय में हुआ था. वहां उन्होंने केएएमएस एरिया अध्यक्षा और केएएमएस डिविजन कार्यकारिणी सदस्या का पदभार संभाला था.

जब वह घर में थीं, उनकी शादी कराने के लिए किए गए सभी प्रयासों का उन्होंने कड़ा विरोध किया. पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद भी शादी के लिए उनके सामने आए कई प्रस्तावों को उन्होंने टुकरा दिया. आखिर 2015 में उनके सामने आए शादी प्रस्ताव को उन्होंने स्वीकारा. नतीजतन उसी वर्ष कामरेड नागेश के साथ उनकी शादी हुई. दोनों जीवन साथियों ने अपनी आखिरी लड़ाई के दौरान जंग–ए–मैदान में नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाने के लिए दुश्मन के साथ लड़ते हुए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड लिम्मि अमर रहें!

कामरेड शामको झूरे (जमुना)

कामरेड जमुना 30 वर्ष पहले उत्तर गढ़चिरौली डिविजन, एटापल्ली तहसील, कसनसूर एरिया, कोंदावाही गांव के मध्यम किसान परिवार में पैदा हुई थी. वह मां सगिनी व बाप मनकु की सबसे बड़ी संतान थीं. वह अपने पीछे दो छोटी बहनों और दो छोटे भाईयों को छोड़ गईं.

कोंदावाही एक संघर्षरत गांव है. उसने बहुत ही हिम्मत से सरकारी दमन का सामना किया. गांव के क्रांतिकारी माहौल के चलते क्रांति के प्रति आकर्षित हुए कई युवती–युवकों में से कामरेड जमुना भी एक थीं. क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में भर्ती होकर सरकारी लूट–पाट व आदिवासी महिलाओं पर जारी कबिलाई पितृसत्ता के खिलाफ महिलाओं को गोलबंद करने में अपनी भूमिका बखूबी निभाई थीं.

गांव के मिलिशिया दस्ते की डिप्टी कमांडर का पदभार भी उन्होंने संभाला. उस दौरान पुलिस स्टेशन के ऊपर फायरिंग, साबोटेज कार्रवाइयों और दुश्मन की समाचार व्यवस्था को ध्वस्त करना आदि गतिविधियों में उनकी भागीदारी थी. उनकी सक्रियता को देख कर एटापल्ली एरिया कमेटी ने उन्हें अंशकालीन पार्टी सदस्यता दी थी.

2004 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. उसके बाद उन्हें मिलिशिया को सक्रिय करने के मकसद से गठित जन मिलिशिया दस्ते की डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी दी गई. बाद में सूर्जागढ़ एलजीएस की उप कमांडर बन कर 2007 तक कार्यरत थीं. 2008 में नवगठित पलटन नंबर 19 में उनका तबादला हुआ. दो साल के बाद उन्होंने पलटन के डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठायी.

बढ़ते आंदोलन के मुताबिक 2010 में जब डिविजन में 10वीं कंपनी का निर्माण हुआ कामरेड जमुना उसका हिस्सा बनीं. पीपीसी सदस्य की हैसियत से 2014 तक वो वहां कार्यरत थीं.

2010 में कामरेड जमुना की शादी हुई. पिछड़े हुए विचार और पितृसत्ता के कारण उनकी वैवाहिक जिंदगी में आई तनावपूर्ण परिस्थिति को उन्होंने संभाल लिया. जब उनके जीवनसाथी के ऊपर अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई कामरेड जमुना ने पलटन कमांडर की जिम्मेदारी संभाली.

मिलिशिया से लेकर अपनी पूरी क्रांतिकारी जिंदगी में सैनिक मोर्चा में ही अपना योगदान देते हुए कामरेड जमुना एक सैनिक योद्धा के तौर पर उभर कर आईं. पीएलजीए द्वारा दुश्मन के ऊपर किए गए नारुगुंडा, ताडगांव, आशा, कोरेपल्ली आदि हमलों में उन्होंने भाग लिया. चाहे वह आपर्चनुटी एंबुश हो या डेलिबरेट एंबुश, हर कार्यवाही में उनकी भागीदारी जरूर रहती थी.

कामरेड जमुना सभी लोगों से प्यार भरे व्यवहार के साथ पेश आती थी. उनकी शहादत से पीएलजीए ने एक अनुशासित व विश्वसनीय योद्धा व महिला कमांडर को खोया.

कामरेड जमुना अमर रहें!

कामरेड शंकर कोंडागोरला (संदीप)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, अहेरी एरिया, मरपल्ली गांव के महर (दलित) समुदाय के गरीब किसान परिवार में कामरेड संदीप का जन्म हुआ. गढ़चिरौली आंदोलन के शुरूआती समय(1880–81) से मरपल्ली गांव क्रांति के पक्ष में खड़ा रहा. उस समय वन विभाग, पेपर मिल और सेठ–साहूकारों के शोषण और दमन–अत्याचार के खिलाफ संघर्ष में आगे आने वाले कई गांवों में मरपल्ली भी एक था.

उन दिनों में आस–पास के कई गांव के लोगों ने इकट्ठा होकर उस गांव में मोर्चा निकाला था. ऐसे संघर्षरत माहौल में कामरेड शंकर पैदा हुए थे.

कामरेड संदीप के मां–बाप आजीविका तलाशते हुए मरपल्ली गांव आये हुए थे. पहले वे मजदूरी करके गुजर–बसर करते थे. बाद में सभी लोगों के जैसे उन्होंने भी जंगल काट कर जमीन हासिल की. मां–बाप ने बचपन में कामरेड संदीप को स्कूल भेजा था. लेकिन परिवार के हालात देख कर कामरेड संदीप पढ़ाई छोड़ कर मां–बाप के साथ जंगल काटने में शामिल हो गए थे. मां–बाप के साथ वह मजदूरी भी करते थे. उनके गांव में क्रांतिकारी नाच–गानों का हलचल हुआ करता था. उस माहौल ने कामरेड संदीप को भी अपनी तरफ खींच लिया. वह भी क्रांतिकारी सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल होने लगे थे. इसी क्रम में वो 2004 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गए.

कामरेड संदीप ने घर में ही तेलुगु व मराठी सीख ली. इसी वजह से डिविजन कमेटी ने उन्हें सिरोंचा एरिया में भेजने का निर्णय लिया. 2004 से 2009 तक सिरोंचा गुरिल्ला दस्ते में वह कार्यरत थे. सांस्कृतिक क्षेत्र में उनकी क्षमता के मुताबिक 2010–12 में उन्होंने स्थानीय सीएनएम में अपना योगदान दिया. क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार 2013 में उनका तबादला अहेरी एरिया में हुआ था. तब से शहादत तक वह वहीं पर कार्यरत थे. उस एरिया में राजनीतिक, सांगठनिक, सैनिक मोर्चों में उन्होंने अपनी भूमिका अदा की. टीसीओसी मौकों पर वह प्रधान व सेकंडरी बलों के साथ मिल कर सैनिक कार्रवाइयों में शामिल होते थे.

कामरेड संदीप स्नेहिल स्वभावी थे. सभी लोगों के साथ वह घुलमिल जाते थे. जनता उन्हें बहुत प्यार करती थी. वे दस्ते में डॉक्टर जिम्मेदारी भी निभाते थे. इसीलिए भी वे जनता के लिए खास हो गए थे.

पेशेवर क्रांतिकारी बन कर ज्यादा वर्ष होने के बावजूद शादी के लिए वे कभी जल्दबाज नहीं हुए. 2016 आखिरी में उन्होंने कामरेड सुनीता जो इसी घटना में शहीद हुई, के साथ शादी के अपने विचार को पार्टी के सामने रखा था. पार्टी की सहमति के बाद दोनों की शादी हुई.

कसनूर हमले में दुश्मन के घेराव को तोड़ कर जाने के लिए अन्य कुछ कामरेडों के साथ कामरेड संदीप ने जो प्रयास किया वह सराहनीय था. घेराव तोड़ कर जाते समय उन्होंने ही सभी लोगों को रास्ता दिखाया. ज्यादा थकने की वजह से उन्होंने अपने कामरेडों के साथ जाने में अपनी असमर्थता जताते हुए सभी लोगों को आखिरी लालसलाम पेश किया. इस भीषण हमले में जब एक के बाद एक पीएलजीए कामरेड्स घायल होने लगे थे, दुश्मन बलों ने आत्मसमर्मण करने के काशन दिए थे. उन काशनों को धता बताते हुए कामरेड संदीप आखिरी दम तक लड़ते हुए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड संदीप अमर रहें!

रैसू नरोटि (राजेश)

कामरेड राजेश(28) उत्तर गढ़चिरौली डिविजन के चातगांव एरिय एटापल्ली तहसील के मुरनार गांव के मध्यम वर्गीय परिवार में पैदा हुए. मां बूरे और पिता दामा की छह संतानों में वे दूसरे थे. उनके चार भाई और एक छोटी बहन है. कामरेड राजेश ने तीसरी कक्षा तक पढ़ाई की.

2006 में वह मिलिशिया में भर्ती हुए थे. जुलाई 2006 मे पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. कुछ वक्त तक उन्होंने चातगांव दस्ते में काम किया था. बाद में डेढ़ वर्ष तक वे डीवीसी स्टाफ में कार्यरत थे. 2007 में उन्होंने पार्टी सदस्यता हासिल की. 2009 से 2012 तक दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन स्टाफ टीम के वे कमांडर थे. बाद में तत्कालीन डीवीसी सचिव शेखर जो बाद में गद्दार बन गया, के सुरक्षा गार्ड रहे. जब शेखर पार्टी से भाग गया, उसके द्वारा डंप की गई पार्टी निधि व गोपनीय दस्तावेजों की जानकारी राजेश ने पार्टी को दी थी.

2014 में गठित डिविजन एक्शन टीम के कमांडर की जिम्मेदारी संभाल कर उन्होंने पश्चिम सब जोन के जन युद्ध को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया.

2014 में टीसीओसी के समय में अहेरी ऑपरेशनल कमांड में रह कर आशा आपर्चुनिटी एंबुश में शामिल हुए थे. उन्होंने जिम्मलगट्टा पुलिस स्टेशन के नजदीक होटल में बैठे एसपीओ विठल को खतम किया.

2014 में दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन में संचालित फील्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम में उन्होंने भाग लिया. उसी समय गुरजा गांव में गुरिल्ला कामरेड्स के ठहरने का समाचार पाने वाले दुश्मन बलों ने डेरा का घेराव किया. उस वक्त कामरेड राजेश संतरी ड्यूटी पर थे. उन्होंने तुरंत ही पूरे शिविर को न सिर्फ अलर्ट किया, बल्कि दुश्मन पर पहली गोली दाग कर नेतृत्व को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. 2016 के टीसीओसी के दौरान कामरेड राजेश के

नेतृत्व में हेड्री पुलिस कैंप के नजदीकी साप्ताहिक बाजार में पुलिस पर हमला किया गया, जिसमें एक–एके 47 रायफल और 120 कारतूस जब्त किए गए. उसी साल चलवाडा गांव के पास और एक घटना जिसमें दीपक आत्रम के सुरक्षा गार्ड को खतम करके उनकी बंदूक(एके–47) छीनी गई थी, में शामिल हुए थे. बूर्गी पुलिस ठाने के सामने इरपा आत्रम पर की गई कार्रवाई का उन्होंने नेतृत्व किया.

कामरेड राजेश शादी–शुदा थे. उनकी जीवन साथी कामरेड चंद्रकला भी इसी घटना में शहीद हुई थी.

कामरेड राजेश अमर रहें!

कामरेड शांति गावडे (ललिता)

कामरेड ललिता उत्तर गढ़चिरौली डिविजन धनोरा तहसील पुलकोड्डो गांव के गावडे दंपति की मझोली बेटी थीं. गांव की प्राथमिक शाला में उन्होंने 5वीं तक पढ़ाई हासिल की. बाद में पढ़ाई छोड़ कर घरेलू व खेती काम में मां–बाप का हाथ बंटाती थीं.

गांव में रहते वक्त कामरेड शांति ने मिलिशिया में अपना योगदान दिया था. 2006 में पार्टी द्वारा दिए गए आह्वान को स्वीकारते हुए वह पेशेवर क्रांतिकारी बनी थीं. जुलाई, 2007 से चातगांव एलओएस सदस्या बनीं. 2010 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्यता दी गई. बचपन से ही कामरेड शांति को नाच–गाने के प्रति लगाव था. उनकी अभिरुचि व क्षमता को देख कर उन्हें एरिया सीएनएम की जिम्मेदारी दी गई. सीएनएम डिविजन अधिवेशन में कामरेड ललिता डिविजन कार्यकारिणी सदस्या चुनी गईं.

2009 में उनकी शादी हुई थी. शादी के बाद अपनी वैवाहिक जिंदगी में आई समस्या को सही तरीके में हल करने में वह विफल हुईं. किसी अन्य के साथ भागने की कोशिश की. लेकिन बाद में उन्होंने अपनी गलती मान ली. उनकी गलती की वजह से पार्टी द्वारा उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई. साथ ही उनका जीवन साथी से तलाक हुआ.

अनुशासनात्मक कार्रवाई की समयावधि खत्म होने के बाद 2011 से पार्टी सदस्या की हैसियत से वह दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन के अहेरी एरिया में कार्यरत पीएल–14 सदस्या बनीं. उनके कामकाज का आकलन करने वाली डीवीसी ने अक्टूबर, 2013 में उन्हें एसी सदस्यता दी. उसी वक्त उनका तबादला सिरोंचा एरिया में किया गया. तेलंगाना सीमावर्ती इलाका होने के कारण उस एरिया के लोग तेलुगु भाषा बोलते हैं. पूरी तरह अनजान भाषा होने के बावजूद उन्होंने तेलुगु सीख ली. कुछ ही समय में वह जनता के साथ घुलमिल गईं. वहां काम करते समय एक साथी एसी सदस्य के साथ उनका प्रेम विवाह हुआ. दोनों ने एक दूसरे की मदद करते हुए अपनी वैवाहिक जिंदगी हंसी–खुशी के साथ बिताई.

2015 में उनका तबादला फिर एक बार पलटन–14 में हुआ था. सैनिक क्षेत्र में उनकी क्षमता देख कर डीवीसी ने उन्हें पीएल के उप कमांडर की जिम्मेदारी सौंप दी. कामरेड ललिता दुश्मन से कभी नहीं डरती थीं. दुश्मन के साथ टकराने वह हर हालत में मुस्तैद रहती थीं. गोली का जवाब गोली से देती थीं. वह जहां भी रहती, टीसीओसी में जरूर शामिल होती थीं. नैगुंडा और आशा आपर्चुनिटी एंबुश में उन्होंने भाग लिया. मुक़ाम पर दुश्मन द्वारा किए गए हमलों का उन्होंने डट कर मुकाबला किया. उनकी आखिरी लड़ाई में भी उन्होंने दुश्मन के साथ डटकर लड़ते हुए शहादत को पाया.

कामरेड ललिता अमर रहें!

कामरेड जूरिया वेडदा (प्रदीप)

कामरेड जूरिया छत्तीसगढ़ राज्य, नारायणपुर जिले के कोड्डिलेर गांव में 26 वर्ष पहले पैदा हुए थे. वह मां–बाप के प्रथम पुत्र थे. वे अपने पीछे एक बहन और एक भाई को छोड़ गए.

2005 में जनताना सरकार की कृषि विकास कमेटी में उन्होंने काम करना शुरू किया. पार्टी के आह्वान के मुताबिक जमीन समतलीकरण अभियान में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया. बाद में मिलिशिया में भर्ती होकर मिलिशिया पलटन के सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी निभाई. कारपेट सेक्युरिटी के तहत लगाए गए कुर्सनार कैंप के ऊपर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में उन्होंने भाग लिया. 2006 की गरमी में निब कंपनी के साथ मिल कर टीसीओसी में शामिल हुआ. उस दौरान छह बार पुलिस के साथ मुठभेड़ें हुईं. टीसीओसी खतम होने के बाद जब वह घर गए उनके पिता ने उनसे क्रांतिकारी रास्ता छोड़ने का आग्रह किया. लेकिन कामरेड प्रदीप ने पीछे मुड़कर नहीं देखा था. 28 जुलाई, 2007 को अमर शहीदों के अधूरे सपनों को पूरे करने के महान लक्ष्य से वे पेशेवर क्रांतिकारी

बने थे. छह महीने तक उन्होंने डीवीसी सदस्य की गार्ड जिम्मेदारी निभाई. बाद में तबादला होकर निब कंपनी में छह महीने कार्यरत थे. अप्रैल, 2007 में उनका तबादला गढ़चिरौली में हुआ था. वहां डिविजन प्रेस में नियुक्ति के बाद नियमित रूप से न सिर्फ पोडदु पत्रिका बल्कि अन्य प्रचार सामग्री को स्क्रीन प्रिंटिंग पर निकालने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की. उनके विकास व योगदान के अनुसार उन्हें पीपीसी में लिया गया. प्रेस में काम करते समय ब्यूरो टेलर टीम की कामरेड के साथ उनका प्रेम विवाह हुआ.

पांच वर्ष तक डिविजन में योगदान देने के बाद 2012 आखिरी में उनका तबादला दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन में हुआ था.

2013 से उनकी शहादत तक पेरिमिल एरिया में उन्होंने अपना योगदान दिया. पहले पेरिमिल दस्ते के डिप्टि कमांडर के रूप में मिलिशिया की जिम्मेदारी निभाई. पार्टी आदेश के अनुसार क्रांतिकारी जरूरतों को पूरा करने के लिए जब डीके से एक मिलिशिय पलटन सीओबी गई थी, कामरेड प्रदीप उसके उप कमांडर की जिम्मेदारी संभाली. नया एरिया, अनजान गांव, जनता व टेर्रेन, लगातार हमलों के बावजूद वहां एक वर्ष रह कर पार्टी द्वारा सौंपे गए कार्यभार को संपन्न करने में उन्होंने अपना योगदान दिया. वहां से आने के बाद पेरिमिल दस्ते के कमांडर की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई.

उनके दस वर्ष की क्रांतिकारी जिंदगी में उन्होंने क्रांति में आने वाले कई उतार–चढ़ावों का दृढ़तापूर्वक सामना किया. डिविजन के कुछेक नेताओं की गद्दारी को भी देखा. उसके बावजूद क्रांति के प्रति अटूट विश्वास के साथ उन्होंने आखिरी दम तक जनता की सेवा करते रहे. अपनी आखिरी लड़ाई में उन्होंने नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाने के लिए बहुत ही प्रयास किया. दुश्मन के साथ डट कर लड़ते हुए उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड प्रदीप अमर रहें!

कामरेड जेन्नी तलंडी (चंद्रकला)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, अहेरी तहसील, कमलापुर रेंज के कोडसेपल्ली गांव के गरीब माडिया गोंड किसान परिवार में कामरेड जेन्नी का जन्म हुआ था. गांव की पाठशाला में कामरेड चंद्रकला ने प्राथमिक शिक्षा हासिल की. गरीबी की वजह से बाद में उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी. वह बचपन से ही छोटे, बड़े कामों में मां–बाप का हाथ बंटाती थीं. गरीबी की वजह से 20 वर्षों से गढ़चिरौली के अंदरूनी इलाकों से भी पलायन बढ़ रहा है. कामरेड चंद्रकला भी अपने इलाके के कई युवाओं की तरह मजदूरी करने गयीं. लेकिन ठेकेदार व दलालों के आर्थिक, शारीरिक व लैंगिक शोषण का विरोध करते हुए 5–6 महीनों में ही वह वापस अपने गांव आ गईं. बाद में शोषणविहीन समाज की स्थापना के मकसद से 2008 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं.

बचपन से ही नाच–गाने के प्रति उनका लगाव था. इसीलिए कामरेड चंद्रकला को एरिया सीएनएम जिम्मेदारी सौंपी गई. उस जिम्मेदारी को निभाते हुए उन्होंने नाच–गाने के साथ गांव–गांव में क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार किया. कई युवाओं को क्रांति के प्रति आकर्षित किया.

इस तरह कामरेड चंद्रकला अहेरी एलओएस सदस्य बनकर सीएनएम में दो साल तक अपना योगदान दिया. बाद में उनका तबादला पेरिमिल एरिया में हुआ था. 2010 से 2013 तक उस एरिया की सीएनएम जिम्मेदारी उन्होंने निभाई. गांव–गांव में सीएनएम यूनिटों का निर्माण करने के लिए उन्होंने प्रयास किया. विभिन्न मौकों पर जोन सीएनएम की ओर से चलायी गई कार्यशालाओं में शामिल होकर वह विकसित हुईं. अपनी सांगठनिक क्षमता को बढ़ाने की कोशिश की.

2010 में संपन्न दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन सीएनएम के अधिवेशन में कामरेड चंद्रकला जिला कार्यकारिणी में चुनी गई. उसी साल आयोजित दंडकारण्य जोन अधिवेशन में कामरेड चंद्रकला प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुईं. कामरेड चंद्रकला सांस्कृतिक मोर्चा के महत्व को अच्छी तरह समझ कर समर्पित भावना के साथ काम किया. उन्होंने अहेरी एरिया की रीति रिवाजों के बारे में रिपोर्ट लिख कर झंकार पत्रिका को भेजा था.

झूठे चुनावों के दौरान, सूरजागढ़ जन आंदोलन के समय, विभिन्न क्रांतिकारी दिवसों के अवसरों पर नाच–गाना व नाटक के साथ प्रदर्शन देने में वह सक्रिय भूमिका निभाई.

2015 में कामरेड चंद्रकला की शादी डिविजन स्टाफ कमांडर कामरेड राजेश, जो इसी घटना में शहीद हुए, के साथ हुई. शादी के बाद भी दोनों अलग–अलग जगहों में अलग–अलग जिम्मेदारियां निभाते रहे. दोनों कामरेडों ने आपस में संपूर्ण विश्वास के साथ हंसी–खुशी से अपनी वैवाहिक जिंदगी बिताई.

कसनूर–तुमिरगुंडा जंग–ए–मैदान में कामरेड चंद्रकला ने यह ध्यान नहीं दिया कि अपने जीवन साथी कहां हैं और किस हालात में हैं बल्कि उन्होंने अपनी जिम्मेदारी पर

ध्यान देते हुए साथी कामरेडों को हिम्मत देते हुए घायल साथियों के हाथ पकड़ कर वहां से निकालने की कोशिश की. लेकिन उसी समय आमने–सामने हुए दुश्मन द्वारा की गई गोलीबारी में वह शहीद हुईं.

कामरेड चंद्रकला अमर रहें!

कामरेड दुल्सा नरोटि (नागेश)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, एटापल्ली तहसील, जारावाडा गांव के एक गरीब किसान परिवार में कामरेड नागेश का जन्म हुआ. पाली और कन्नाल नरोटि दंपत्ति की पांच संतान में कामरेड नागेश सबसे बड़े बेटे थे. कामरेड नागेश अपने पीछे तीन बहन और एक भाई को छोड़ गये. बड़े बेटे होने के नाते घरेलू व खेती काम में वह अपने मां–बाप का हाथ बंटाते थे. दिन भर जंगल में घूमते हुए बैल चराने के बावजूद रसोई, धान कूटना, पानी ढोना आदि घरेलू काम जरूर करते थे.

जारावाडा क्रांतिकारी गढ़ माना जाता है. उस गांव ने नान्सू हिचामी, केहको कोवासी, जुनकी दोर्पेटि जैसे नेताओं को क्रांति के लिए समर्पित किया. उसकी वजह से वह दुश्मन की आंखों की किरकिरी बन गयी थी. दुश्मन के दमनात्मक हथकंडों के तहत यहां क्रांतिकारियों के परिजनों का गांव बहिष्कार भी किया गया. इसके बावजूद इस गांव की रिवाज यह है कि यहां पैदा होने वाले हर कोई बचपन से ही किसी न किसी संगठन में शामिल होते है. इस तरह कामरेड नागेश भी 2006 में मिलिशिया में भर्ती हुए थे. मिलिशिया में उन्होंने सक्रिय रूप से हर जिम्मेदारी निभाई. 2008 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. कुछ वक्त तक उन्होंने गट्टा एलओएस में काम किया. 2011 में उन्हें डीवीसी सदस्य के गार्ड की जिम्मेदारी सौंपी गई. दो साल के बाद फिर उनका तबादला गट्टा एलओएस में हुआ था. वहां उन्हें मिलिशिया की जिम्मेदारी दी गई. 2013 में उनका तबादला पेरिमिल दस्ते में किया गया था, जहां उन्हें डीएकेएमएस की जिम्मेदारी सौंपी गई. सांगठनिक अनुभव कम होने के बावजूद अनुभवी कामरेडों की मदद से वह अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए कोशिश करते थे.

पेरिमिल दस्ते में काम करते समय भामरागढ़ एसी सदस्या कामरेड लिम्मि, जो इसी हमले में शहीद हो गईं, को उन्होंने पसंद किया. डीवीसी के सामने उन्होंने अपना विचार रखा था. कामरेड लिम्मि द्वारा उनके विवाह प्रस्ताव का अनुमोदन करने पर 2015 में वे शादी–शुदा हो गए. पितृसत्ता विचार का शिकार होकर उन्होंने जो गलती की उसका खुलेदिल से स्वीकार किया. उन्होंने अपनी जीवनसंगिनी से वादा किया था कि वह अपनी गलती को नहीं दोहरायेगा.

कामरेड नागेश एक साहसिक गुरिल्ला कमांडर थे. दुश्मन के साथ जब भी और जिस किसी भी हालत में उनकी भेंट होती, वह डटकर प्रतिरोध करते. जून, 2016 में गुंडापुरी गांव के पास ठहरे गुरिल्ला दस्ते की सूचना पाकर जब दुश्मन बल हमला करने आये थे, तब संतरी पर तैनात कामरेड नागेश के हथियार से ही पहली गोली निकली, तो सी–60 कमांडों के एक जवान ने वहीं पर दम तोड़ा. गुंडुरवाया और कुर्सनार में अपनी बंदूक में स्टापेज आने के बावजूद दस्ते को अलर्ट करके सुरक्षित निकालने में उन्होंने मदद दी.

अपनी आखिरी लड़ाई में भी नेतृत्वकारी कामरेडों को सुरक्षित निकालने का रास्ता खोजने के लिए उन्होंने हिम्मत व साहस के साथ प्रयास किया. उसी प्रयास में दुश्मन की गोली लगने से उनकी शहादत हुई.

कामरेड नागेश अमर रहें!

कामरेड दानू उयका (कार्तीक)

कामरेड दानू उयका उत्तर गढ़चिरौली डिविजन, टिप्रागढ़ एरिया, धनोरा तहसील के कटेझरी गांव में 40 वर्ष पहले एक मध्यम किसान परिवार में पैदा हुए थे. वह मां–बाप के बड़े बेटे थे. उनके पीछे दो बहन और दो भाई हैं.

कामरेड कार्तीक के बचपन में उनके गांव में 'संगठनों को ही सभी अधिकार' का नारा गूंजता था. लेकिन 1990 से जारी दमन ने टिप्रगढ़ एरिया को बुरी तरह प्रभावित किया. उस एरिया के मंगेझरी गांव में 14 किसानों का नरसंहार किया गया. उस भीषण दमन को पार करते हुए 1996–97 तक वहां फिर निर्माणों का पुनर्गठन हुआ. बाद में पार्टी से भागने वाले कुछ गद्दारों द्वारा पार्टी व संगठन व निर्माणों की सूचना पुलिस को पहुंचने की वजह से फिर एरिया में दमन बढ़ गया. इससे जनता पर तीव्र नकारात्मक प्रभाव पड़ा था. गुरिल्ला कामरेड्स दिखते ही लोगों में गुस्सा फूटता था. उस बदहाल स्थिति को फिर अनुकूल बदलने के लिए वहां के कामरेडों द्वारा किए गए अथक प्रयासों को 2000 तक सफलता मिली. ध्वस्त हुए निर्माणों का फिर एक बार पुनर्गठन हुआ. उस समय

डीएकेएमएस में काम करते हुए 2001 में कामरेड कार्तीक पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. 2002 से 2004 तक वह डिविजन सप्लाई दस्ते में कार्यरत थे. उसी समय क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के लिए एसजेडसी द्वारा निर्णय लिया गया. उस निर्णय के अमल के लिए गढ़चिरौली से जिन 8 कामरेडों को भेजा गया था, उनमें से कामरेड कार्तीक भी एक थे. मानपुर डिविजन के औंधी दस्ते के उप कमांडर का दायित्व उन्होंने संभाला था. छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती गांव में पलने–बढ़ने के कारण उन्हें छत्तीसगढ़ी भाषा की अच्छी जानकारी थी. इसलिए वह जनता के साथ जल्द ही घुलमिल गए थे.

पीएलजीए में भर्ती होने के पहले ही कामरेड कार्तीक की शादी हुई और तलाक भी हुआ. औंधी दस्ते में काम करते समय नैतिक गलती करने की वजह से उन पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की गई. उस कार्रवाई को बर्दाश्त न करते हुए 2008 में वह फिर गढ़चिरौली वापस गए. उसके बाद 2011 तक उन्होंने डीवीसी स्टाफ में अपना योगदान दिया. 2009 में उनकी शादी हुई. बाद में कुछ कारणवश वह घर गए थे. दो–तीन महीने के बाद वह आत्मालोचना करके फिर पार्टी में आ गए. 2011 से 2015 तक पलटन–7 के पीपीसी सदस्य की हैसियत से उन्होंने अपना योगदान दिया. 2015 में उनके ऊपर और एक बार नैतिक आरोप आने की वजह से वे डीमोट हो गए. 2018 में उनके कामकाज की समीक्षा करने वाली डीवीसी ने उन्हें एसी पदोन्नति देकर उनका तबादला पेरिमिल एरिया में किया.

कामरेड कार्तीक एक गुरिल्ल चिकित्सक भी थे. जरूरतमंद साथी कामरेडों और जनता का वह तत्परता से इलाज किया करते थे.

उनकी आखिरी लड़ाई में उनके पैर में गोली लग गई. उनकी बंदूक भी जाम हो गई. इसके बावजूद उन्होंने अन्य कामरेड की बंदूक लेकर आखिरी गोली तक लड़ते हुए अपनी जान कुरबान की.

कामरेड कार्तीक अमर रहें!

कामरेड पाली माहका (राधा)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील के नेलगुंडा गांव के एक गरीब परिवार में 28 वर्ष पहले कामरेड राधा ने जन्म लिया. वह मां कोली व बाप वाले की दूसरी संतान थीं. उनकी एक बड़ी बहन और दो छोटे भाई हैं. बीमारी की वजह से कामरेड राधा के पिता की अकाल मृत्य होने पर मां और बेटियों ने ही घरेलू व खेती काम संभाला. इसकी वजह से कामरेड राधा को पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला. एक क्रांतिकारी गांव में पलने–बढ़ने की वजह से कामरेड राधा के ऊपर बचपन से ही क्रांतिकारी आंदोलन का प्रभाव रहा. बचपन में ही सीएनएम में भर्ती होकर उन्होंने दो साल तक अपना योगदान दिया. नवजवान होने के बाद उन्होंने मिलिशिया में एक वर्ष काम किया. उनकी क्रांतिकारी चेतना और सक्रियता देख कर 2008 में उन्हें गांव के क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की जिम्मेदारी दी गई.

गांव के मुखियाओं के दबाव और पितृसत्ता के खिलाफ उन्होंने महिलाओं को एकजुट किया. पारंपरिक रीति–रिवाज के अनुसार बचपन में ही उनकी सगाई हुई. लेकिन क्रांतिकारी चेतना बढ़ने के बाद शादी से इनकार करके 2009 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन कर पीएलजीए में शामिल हुई. 2011 में उन्हें डीवीसी स्टाफ की जिम्मेदारी दी गई. 2013 में उनका तबादला भामरागढ़ एरिया में हुआ था, जहां उन्होंने डॉक्टर की जिम्मेदारी निभाई. दस्ते में शिक्षिका की जिम्मेदारी भी निभाई. वह एक मेहनती कामरेड थी. उनके विकास के मुताबिक 2018 में उन्हें एसी सदस्यता दी गई. बाद में उनका तबादल अहेरी एरिया में हुआ था. अपने तबादले के प्रस्ताव को हंसी–खुशी से मान कर उन्होंने उस एरिया में कदम रखा

लेकिन एक महीने के भीतर ही उनकी शहादत हुई.

कामरेड पाली माहका को लाल जोहार!

रानू नरोटी (श्रीकांत)

कामरेड श्रीकांत का जन्म महाराष्ट्र–छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती कांकेर जिले के मोरखंडी गांव में हुआ था. यह गांव दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन के गट्टा एलओएस दायरे में है. वह मां–बाप के दूसरे बेटे थे. उनके तीन भाई हैं. मां की अकाल मृत्य होने की वजह से अकेले पिता ने चार छोटे बच्चों की परवरिश की. घर की गरीब हालत की वजह से पिता के साथ कामरेड श्रीकांत भी मजदूरी करते थे. इसके अलावा खेती व घरेलू कामों में पिता का हाथ बंटाते थे. एक ओर दिन–रात मेहनत करते हुए दूसरी ओर सीएनएम में भी काम करते थे. वह एक अच्छे कलाकार थे. बाद में उनकी नियुक्ति मिलिशिया में हुई थी. इस तरह गांव में रहते समय राजनीतिक प्रचार,

प्रतिरोध और सामूहिक कामों में उन्होंने अपना योगदान दिया. 2012 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बने. भर्ती होने के बाद उनका पहला योगदान भामरागढ़ दस्ते में रहा. दस्ते के रोजमर्रा क्रियाकलापों में वह सक्रिय रूप से भाग लेते थे. पढ़ाई पर भी ध्यान देते थे.

उनके कामकाज व अनुशासन को देख कर 2014 में उनकी नियुक्ति डीवीसी सचिव कामरेड श्रीनू के सुरक्षा गार्ड के रूप में हुई थी. गार्ड जिम्मेदारी को उन्होंने अनुशासन के साथ निभाया. उन्हें सौंपे गए किसी भी काम को सफलतापूर्वक करने के लिए वह हर संभव कोशिश किया करते थे. सभी लोगों के साथ घुलमिल कर रहते थे. वे एक साहसी थे. फायरिंग व एंबुशों में हिम्मत के साथ भाग लेते थे.

उनकी आखिरी लड़ाई में जब उनके कमांडर कामरेड श्रीनू घायल हुए थे, कामरेड श्रीकांत ने तुरंत उनके नजदीक जाकर उनके हथियार लेकर उन्हें कव्हर फायरिंग दी. अपने कमांडर के पास के मुख्य पत्रों को सुरक्षित करके आखिरी दम तक लड़ते हुए उन्होंने शहादत को पाया. इस तरह कामरेड श्रीकांत एक आदर्श गार्ड के रूप में क्रांतिकारी इतिहास में अपनी जगह बना ली.

कामरेड श्रीकांत अमर रहें!

कामरेड बिच्चू गावडे (सन्नू)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन के अहेरी तहसील, कोरेपल्ली गांव में कामरेड सन्नू पैदा हुए थे. उनकी मां चैते और बाप बोडका हैं. गरीबी के चलते बचपन में कामरेड सन्नू को पढ़ाई नसीब नहीं हुई. खेती काम करते हुए वे पार्टी के संपर्क में आए थे. डीएकेएमएस अध्यक्ष पद को उन्होंने संभाला. संगठन में उनकी सक्रियता के फलस्वरूप उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई.

2004 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर अहेरी दस्ते के सदस्य बने थे. कुछ वक्त तक एरिया में काम करने के बाद उनका तबादला पीएल–19 में हुआ था. पीएल–19 रद्द होने के बाद वे पीएल–7 का हिस्सा बने थे. 9 वर्ष की उनकी क्रांतिकारी जिंदगी सैनिक क्षेत्र में ही गुजरी थी. पीएलजीए के रोजमर्रा कार्यक्रमों में वह अनुशासन के साथ शामिल होते थे. वह एक अच्छे हथियार मेकानिक थे. भरमार बंदूक बनाने में वह माहिर थे.

वह जितनी सैनिक कार्यवाहियों में शामिल हुए, उन सभी में हिम्मत के साथ लड़े थे. ईंदूर, वीसामुंडि, पल्ले, दोडगेर एवं मुक्केला में दुश्मन द्वारा किए गए हमलों का उन्होंने हिम्मत के साथ प्रतिरोध किया. उनकी आखिरी लड़ाई में भी हिम्मत के साथ दुश्मन का मुकाबला करते हुए उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड सन्नू अमर रहें!

कामरेड पोटामी सुक्की (रेश्मा)

कामरेड सुक्की का जन्म बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया के कोरचोली गांव में एक किसान परिवार में 32 साल पहले हुआ था. कोरचोली गांव, कामरेड रेश्मा का परिवार और उनके रिश्तेदार सभी क्रांति से जुडे हुए हैं. गांव में रहते समय कामरेड रेश्मा ने मिलिशिया में अपना योगदान दिया था. खासकर सलवा जुडुम के दौरान दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए गांव की सुरक्षा करने में उनकी सक्रिय भूमिका थी. वह गांव के समष्टि कामकाज में शामिल होकर कड़ी मेहनत किया करती थी.

वह शादी–शुदा थीं. उन्होंने एक बच्ची को भी जन्म दिया था. उनके जीवन साथी की सलवा जुडुम गुंडों ने हत्या की. उनकी बच्ची की भी मृत्य हुई. बाद में उन्होंने कभी शादी नहीं की.

2007 में उन्होंने गढ़चिरौली डिविजन में कदम रखा था. 2007 से अक्टूबर 2012 तक सप्लाई दस्ते में वह कार्यरत थीं. पश्चिम ब्यूरो में संचालित हर कार्यक्रम को सफल करने में सप्लाई टीम कामरेडों की मेहनत व भूमिका महत्वपूर्ण रही. कामरेड रेश्मा भी पुरुष कामरेडों के बराबर कंधे पर कावड रख कर सामान ढुलाई किया करती थीं.

2012 से जनवरी, 2016 तक कामरेड रेश्मा एसजेडसी कामरेड की सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी निभाई. उन्होंने अपनी कमांडर की आंख की पुतली के समान देखरेख की थी. नींद व आराम की परवाह किए बगैर दिन–रात नेतृत्वकारी कामरेडों को मदद देती थीं. कामरेड रेश्मा ऐसा सोचती थी कि नेतृत्वकारी कामरेडों का अच्छा ख्याल रखने से वे कुछ ज्यादा दिन तक ज्यादा काम कर सकेंगे और उनकी जिम्मेदारी अच्छी तरह निभा सकेंगे.

जनवरी, 2016 में गार्ड जिम्मेदारी से मुक्त होकर वह पीएल–14 की सदस्या बनीं. सीनियर पार्टी सदस्या की हैसियत से वह हर काम जिम्मेदारी के साथ करती थीं. कामरेड रेश्मा स्नेहिल स्वभाव की थीं. सभी कामरेडों के

साथ घुल–मिलकर रहती थीं. जनता के साथ घनिष्ठ संबंध रखती थीं. जनता को चिकित्सा सेवाएं मुहैया कराने के लिए कामरेड रेश्मा ने कुछ हद तक चिकित्सा का ज्ञान भी हासिल किया. 2009 में वह गंभीर रूप से टीबी का शिकार हुई. सही समय पर इलाज नहीं मिलने की वजह से उन्हें बेहद तकलीफ झेलनी पड़ी.

सैनिक कार्यवाहियों में वह हिम्मत के साथ लड़ती थीं. ईंदूर और गुरजा मुठभेड़ों में उन्होंने हिम्मत के साथ प्रतिरोध किया. नैगुंडा गांव के पास जब दुश्मन के साथ अचानक आमना–सामना हुआ था, पायलट रही रेश्मा ने ही पहली गोली मारी, तो सभी लोगों को सुरक्षित रिट्रीट होने का मौका मिला था. दिसंबर, 2017 में हुई कल्लेडा मुठभेड़ से वह सुरक्षित निकली थी. जनता की मदद से फिर पार्टी के संपर्क में आयी थीं. कसनूर–तुमिरगुंडा में दुश्मन से लोहा लेते हुए उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड रेश्मा एक सीधा–सादा कामरेड थीं. सुंदरता के नाम पर पितृसत्ता द्वारा महिलाओं पर थोपी गई वेशभूषा को कामरेड रेश्मा ने खारिज कर अपना बाल कटवाया था और उन्होंने कभी उसे नहीं बढ़ाया. कामरेड रेश्मा ने इस तर्क कि बाल कटिंग करने से फायरिंग में जब अलग होते हैं या रास्ता भटकते हैं या फिर घायल होते हैं तो सिविल होकर बच निकलने में परेशानी होगी, को हरा दिया.

कामरेड रेश्मा अमर रहें!

कामरेड पुला कोडापे (सुनीता)

कामरेड सुनीता दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, अहेरी तहसील, जिम्मलगट्टा रेंज शिंदे गांव में पैदा हुई थीं. वह

मां–बाप की प्रथम संतान थीं. उनका एक छेटा भाई है. बचपन में ही उनके सिर पर से पिता का साया उठ गया था. बड़ी बेटी होने की वजह से परिवार के बोझ को मां के साथ कामरेड सुनीता को भी उठाना पड़ा था. उसके बावजूद वह गांव की क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होती थीं. वह गांव के केएएमएस सदस्या बनी थीं. जिम्मलगट्टा रेंज में महिलाओं को जागृत करने के लिए संचालित प्रचार व राजनीतिक कक्षाओं में उन्होंने भाग लिया. 2005 में पहली बार संचालित जोन स्तरीय अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में वह शामिल हुई थीं. उसके बाद संचालित गढ़चिरौली डिविजन केएएमएस अधिवेशन में भी वह शामिल हुईं. शहीद कामरेड मीना के नेतृत्व में अहेरी एरिया में महिला आंदोलन का निर्माण करने में, उसे मजबूत करने में एवं उसका विस्तार करने में कामरेड सुनीता का योगदान रहा. केएएमएस में काम करते हुए अपनी चेतना को बढ़ा कर 2008 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. वह पहले नव गठित पीएल–19 में दो साल तक कार्यरत थीं. अगस्त, 2009 में उनका तबादला सिरोंचा एरिया में हुआ था. सिरोंचा एरिया में एक ओर सागौन पेड़ों को अवैध रूप से काट कर बेचने का धंधा और दूसरी ओर वन विभाग के अधिकारियों का जुल्म जारी है. दोनों के खिलाफ वहां जारी संघर्ष में कामरेड सुनीता सक्रिय रूप से शामिल हुईं.

पार्टी की जरूरत के अनुसार कामरेड सुनीता का तबादला डिविजन स्टाफ में हुआ था. उसमें काम करते समय सिरोंचा से लेकर भामरागढ़ तक की जनता से उनका परिचय हुआ.

वह बचपन से ही कुपोषण का शिकार थीं. शारीरिक रूप से कमजोर रहने के बावजूद वह हिम्मत के साथ प्रतिरोध कार्यवाहियों में शामिल होती थीं. कई बार पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ों में, एंबुशों में उन्होंने हिम्मत के साथ दुश्मन का मुकाबला किया. कोडसेपल्ली गांव में संतरी में तैनाती के समय और आशा आपर्चुनिटी एंबुश में रोड टीम में रह कर दुश्मन के दिखते ही कामरेड सुनीता ने ही पहली गोली दागी. पेरिमिल एरिया में गुरजा फायरिंग और अहेरी एरिया में एर्रागड्डा फायरिंग में हिम्मत के साथ लड़ते हुए अपने साथी कामरेडों को हिम्मत देते हुए उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला. कसनूर–तुमिरगुंडा में भी आखिरी तक साथी कामरेडों को हिम्मत देते हुए वह शहीद हुईं.

कामरेड सुनीता शादी–शुदा थीं. उनके जीवन साथी कामरेड संदीप भी इसी भीषण हमले में शहीद हुए थे.

कामरेड सुनीता अमर रहें!

कामरेड गुड्डू लक्कडा (संजय)

कामरेड संजय का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य, कांकेर जिला, पूसगुट्टा गांव के गरीब उरांव परिवार में हुआ था. पूसगुट्टा गांव दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन के भामरागढ़ सांगठनिक इलाके के दायरे में आता है. कामरेड संजय के मां–बाप 30 वर्ष पहले जमीन तलाशते हुए इस गांव में आकर बस गए थे. कामरेड संजय के एक बड़ा भाई हैं. बचपन में ही मां–बाप का निधन होने पर दोनों भाई अपने चाचा के घर में बड़े हो गए. ऐसी हालत में उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई. पूरा दिन खेती काम और

बैल चराने में गुजरता था. मजदूरी भी किया करते थे. अपनी जिंदगी के अनुभव से क्रांति की जरूरत को समझने वाले कामरेड संजय 2012 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुए. कुछ ही दिनों तक एरिया में काम करने के बाद उनका तबादला अहेरी एरिया में हुआ था. वहां जाकर उन्होंने जनता, जंगल व रास्तों पर अच्छी पकड़ हासिल की. जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने की वजह से जनता पर निर्भर होकर कोई भी काम वह सफलतापूर्वक कर सकते थे.

कठिन परिस्थिति से गुजर रहे अहेरी आंदोलन को दुश्मन के भीषण दमन के बीच में ही आगे ले जाने के लिए जनता व क्रांति के प्रति अटल विश्वास के साथ उन्होंने कड़ी मेहनत की.

कामरेड संजय शादी–शुदा थे. हालांकि कल्लेडा मुठभेड़ में उनकी जीवनसाथी शहीद हुईं. क्रांतिकारी चेतना के साथ उस व्यथा से वह उबर गए.

दुश्मन के साथ वह डट कर लड़ते थे. कसनूर–तुमिरगुंडा हमले में दुश्मन के ऊपर अड्वांस होते समय दुश्मन की गोली लग कर उनकी शहादत हुई.

कामरेड संजय अमर रहें!

कामरेड बन्नी गावडे (जयशिला)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, एटापल्ली तहसील, पेरिमिल एरिया, पिंडिगुंडा गांव के गरीब किसान परिवार में कामरेड जयशिला का जन्म हुआ. शहादत के समय कामरेड जयशिला की उम्र 22 वर्ष थी. वह मां–बाप की प्रथम संतान थीं. वह अपने पीछे दो बहन और दो भाईयों को छोड़ गई. गांव के क्रांतिकारी माहौल में क्रांतिकारी नाच–गाना देख–सुनकर वह बड़ी हो गई. गांव की पाठशाला में 5वीं तक उन्होंने पढ़ाई की. 2012 में 16 वर्षीय उम्र में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. 2012 से 2015 तक वह पेरिमिल दस्ते में कार्यरत थीं. पार्टी की जरूरत के अनुसार 2015 में अहेरी एरिया में उनका तबादला हुआ. वह बचपन से माडिया गोंडी बोलती थीं. अहेरी एरिया में जाने के बाद उन्होंने वहां की राज गोंडी बोली सीख ली. वह विभिन्न भाषाएं सीखने की शौकीन थीं. स्कूल में सीखी मराठी के आलावा उन्होंने हिंदी और तेलुगु सीख ली. अंग्रेजी सीखने की कोशिश भी की थी. पढ़ाई में उनकी होशियारी देख कर राजनीतिक रूप से विकसित करने के मकसद से उन्हें बुनियादी साम्यवादी प्रशिक्षण शाला में भेज दिया गया. वहां प्रशिक्षण हासिल करके उन्होंने अपनी राजनीतिक समझदारी को बढ़ा लिया. इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया.

पश्चिम सब जोन में विशाल जनता को गोलबंद करने के लक्ष्य से प्रशिक्षित की गयी पार्टी कतारों में कामरेड जयशिला भी शामिल थीं. अहेरी दस्ते में उन्हें सीएनएम की जिम्मेदारी दी गई. उस जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने के लिए उन्होंने भरपूर कोशिश की. दस्ते में उन्होंने डॉक्टर जिम्मेदारी भी निभाई. उनमें किसी भी जिम्मेदारी को निभाने का जोश दिखता था.

कसनूर–तुमिरगुंडा घटना में घायल हुए कामरेडों को भीषण हमले के बीच में ही खून रोकने के इंजेक्शन देकर उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया. उस प्रकार आखिरी दम तक उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड जयशिला अमर रहें!

कामरेड तुलसी धुर्वा (रुक्मति)

कामरेड रुकमति गढ़चिरोली जिला, भामरागढ़ तहसील, बेज्जूरपल्ली गांव के एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुई थीं. मां जानो और बाप देवू की छह संतानों में वह तीसरी थी. कामरेड रुक्मति ने 4थीं तक पढ़ाई हासिल की. उनके परिवार पर गांव के मुखियाओं का दबाव रहता था. उस दबाव को सहन न करने वाले उनके परिवार ने गांव छोड़ कर जाने के लिए सोचा था. उस समय स्थानीय दस्ता उस परिवार के पक्ष में खड़ा रहा था. कामरेड रुक्मति की बड़ी बहन केएएमएस एरिया कमेटी में काम करती थीं. उनके द्वारा क्रांतिकारी गीतों–बातों को सुन कर कामरेड रुक्मति उत्तेजित होती थीं. लेकिन कामरेड रुक्मति को उनकी मां दस्ते के पास जाने नहीं देती थीं. हालांकि हमेशा के लिए उन्होंने नहीं रोक पाया.

दस्ते से परिचय होने के बाद कुछ दिनों के लिए वह दस्ते के साथ ही रहीं. आखिरकार 2010 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. दो वर्ष तक वह पेरिमिल दस्ते में अपना योगदान देती रहीं. वह अनुसाशन का पालन करते हुए दस्ते की रोजमर्रा गतिविधियों में हंसीखुशी से शामिल होती थीं. उसके बाद पलटन–7 में वह स्थानांतरित की गयी. तब से लेकर शहादत तक उन्होंने पलटन द्वारा की गई कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया.

पलटन की ब्रांच मीटिंग में डॉक्टर काम सीखने की इच्छा कामरेड रुक्मति ने जताई, तो पार्टी ने अनुमोदन किया. उस जिम्मेदारी को उन्होंने सटीक निभाया.

कामरेड रुक्मति ने कुछ वक्त तक अहेरी एरिया में कार्यरत पीएल–14 में काम किया. पल्ले, मुक्केला और वीसामुंडी के पास मुकाम के ऊपर दुश्मन द्वारा किए गए हमलों में वह दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए रिट्रीट हुईं. पीएलजीए द्वारा दुश्मन पर किए गए ताडगांव, दोडराज, कुंजेमरका एवं बेज्जूरपल्ली एंबुशों में वह शामिल हुई थी.

कसनूर–तुमिरगुंडा हमले के दौरान वह ए संतरी पर तैनात थीं. दुश्मन का डटकर सामना करते हुए उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड रुक्मति अमर रहें!

कामरेड वेडदे कोवासी (रजनी)

कामरेड रजनी ने दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, एटापल्ली तहसील, वंगेतोरी गांव के एक गरीब परिवार में जन्म लिया था.

वह मां दोबे व बाप गिसा की लाड़ली बेटी थी. वह अपने पीछे एक बहन और एक भाई को छोड़ गई. कामरेड रजनी ने 5वीं तक पढ़ाई की. बीमारी के चलते कामरेड रजनी के बाप का उसके बचपन में ही निधन हुआ था. उसके बाद उनकी मां ने दागुनटोला गांव के एक व्यक्ति के साथ शादी की. लेकिन कुछ वक्त के बाद जादू–टोना के अंधविश्वास के चक्कर में दोनों की गांव वालों ने हत्या की. उस समय कामरेड रजनी ने बेहद कठिनाइयों का सामना किया. बाद में वह ताडबईल गांव में स्थित अपने ताऊ की बेटी के यहां गईं. वहीं पर वह वयस्क हो गईं. उसी गांव में रहते समय उन्होंने गुरिल्ल दस्ते के साथ अपना रिश्ता बना लिया. गुरिल्ला दस्ते के साथ घूमते हुए गुरिल्ला डॉक्टरों के पास चिकित्सा सीख कर वह जनता का इलाज किया करती थीं. 2012 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में उनकी भर्ती हुई. 2015 में डीवीसी सदस्य की सुरक्षा गार्ड की जिम्मेदारी उन्हें सैंपी गई.

जनवरी, 2018 में वह गार्ड जिम्मेदारी से रिलीव होकर डीवीसी प्रस्ताव के अनुसार अहेरी एरिया में काम करने के लिए गयी थीं. वहां की पीएल–14 में उनकी नियुक्ति हुई. कसनूर युद्ध मैदान में वह बुरी तरह घायल हुई. जब उन्हें समझ में आया कि उनकी मौत नजदीक आई तब उन्होंने अपने अन्य साथियों के साथ अपनी आकांक्षा जताई कि वे सुरक्षित बाहर निकलें और पार्टी को इस नुक्सान के पीछे के धोखे के बारे में अवगत कराएं.

कामरेड रजनी अमर रहें!

कामरेड मूको परसा (रेश्मा)

कामरेड रेश्मा दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील, आलदंडी गांव के एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुई थीं. वह मां पेडी और बाप मूरा की प्रथम संतान थीं. वह अपने पीछे तीन बहनों को छोड़ गई थीं. गरीबी के चलते मां–बाप के साथ मिल कर कामरेड रेश्मा भी मजदूरी किया करती थीं. बड़ी बेटी होने के नाते घर संभालने में भी वह मां–बाप का हाथ बंटाती थीं. एक ओर इस तरह मेहनत करते हुए दूसरी ओर मिलिशिया में भर्ती होकर क्रांति में अपनी भूमिका निभाई. 2012 में उन्होंने पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन कर गुरिल्ला जिंदगी में कदम रखा था. उनकी पहली नियुक्ति अहेरी एरिया में हुई थी. वहां जाकर उन्होंने जनता की बोली सीख ली. तीव्र दमन के बीच में उन्होंने हिम्मत के साथ काम किया. कमांडर के आदेश के मुताबिक दिन–रात कहीं भी जाकर काम निपटा कर आती थीं. दुबली–पतली होने के बावजूद सामान ढोने में आगे रहती थीं. अहेरी एरिया के लोगों की जिंदगी, उनके सुख–दुख के बारे में समझने के लिए उन्होंने कोशिश की. जनता पर जारी शोषण व उत्पीड़न को खतम करने के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों में भी क्रांति व जनता के प्रति अटल विश्वास के साथ आखिरी दम तक वह अपनी जिम्मेदारी निभाती रही.

कामरेड रेश्मा अमर रहें!

कामरेड धर्मु पुंगाटि (तिरुपति)

कामरेड तिरुपति दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील, पेरिमिल एरिया, केहकापरी गांव के गरीब किसान परिवार में जन्मे थे. वह मां–बाप के एकलौते–प्यारे बेटे थे. 10वीं पढ़ते समय वह पार्टी संपर्क में आकर पार्टी द्वारा सौंपे गए काम निपटाते थे. मां–बाप को खेती काम में सहयोग देने वाले कोई नहीं होने की वजह से वह बीच में

पढ़ाई छोड़ कर खेती काम में मां–बाप का हाथ बंटाते थे. सांगठनिक काम में भी सक्रिय रहते थे. कामरेड तिरुपति की राजनीतिक चेतना और जनता के साथ उनके रहन सहन को नजर में रख कर पार्टी ने 2011 में उन्हें गांव के डीएकेएमएस अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी थी. मां–बाप ने उनकी शादी करायी. लेकिन दो वर्ष भी नहीं बीते कि प्रसव के समय उनकी पत्नी की मौत हुई. पारिवारिक तकलीफों को झेलने के बावजूद वे सांगठनिक काम में सक्रियता कम नहीं होने देते थे. इसकी वजह से उनके ऊपर दमन बढ़ गया. हर दिन उन्हें पुलिस कैंप बुला कर पुलिस अधिकारियों द्वारा डराया–धमकाया जाता था जिससे उन्हें बेहद परेशानियों को झेलना पड़ा. उन्हें घरेलू व खेती काम संभालने का मौका भी नहीं मिलता था. उस दमन से बचने के लिए वह छत्तीसगढ़ में मौजूद अपने रिश्तेदारों के यहां जाकर कुछ दिन वहीं पर रुके थे. बाद में उन्होंने सोचा कि इस तरह छुप कर रहने से बेहतर है कि गुरिल्ला दस्ते में भर्ती होकर दुश्मन के दमन का मुकाबला किया जाए. फिर दिसंबर 2014 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बने. गुरिल्ला दस्ते में उन्हें शिक्षक की जिम्मेदारी दी गई. दस्ते के रोजमर्रा कामकाज में शामिल होते हुए वह अपनी ठोस जिम्मेदारी पर ध्यान देकर अनपढ़ कामरेडों को शिक्षित करने की कोशिश किया करते थे. कामरेड तिरुपति के राजनीतिक व सैद्धांतिक विकास को नजर में रखकर पार्टी ने फरवरी, 2018 में उन्हें पेरिमिल एरिया के डीएकेएमएस अध्यक्ष का पद भार सौंप दिया. वे डिविजन डीएकेएमएस कमेटी के सदस्य रहे. उस जिम्मेदरी के मुताबिक गांव–गांव घूमते हुए राजनीतिक, आर्थिक और विस्थापन विरोधी संघर्षों में किसानों को गोलबंद करने के लिए उन्होंने कठोर परिश्रम किया.

इसी दौरान उनकी शहादत हुई.

कामरेड तिरुपति अमर रहें!

कामरेड बाली लेकामी (जानकी)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, अहेरी तहसील, साकल गांव में कामरेड बाली का जन्म हुआ. मां–बाप की पांच संतानों में कामरेड बाली दूसरी थीं. वह अपने पीछे एक बड़े भाई, दो छोटे भाईयों और एक छोटी बहन को छोड़ कर गई. कामरेड बाली के बचपन में ही सांप के डंसने से उनकी मां का निधन हुआ. बाद में उनके पिता ने फिर शादी कर ली. बाद में कामरेड बाली अपने मामा के घर पर ही पली–बड़ी. उसके बाद शादी के लिए की गई कोशिशों को खारिज करते हुए 2011 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. दो साल तक उन्होंने अहेरी एरिया में अपना योगदान दिया. 2012 में उनका तबादला सिरोंचा एरिया में हुआ था. वहां से 2016 में उनका तबादला पेरिमिल एरिया में हुआ था. वहां की पीएल–7 में वह कार्यरत थीं. वहां उन्होंने बाल संगठन की जिम्मेदारी निभाई.

वह शादी–शुदा थीं. वैवाहिक जिंदगी में आने वाली छोटी–मोटी समस्याओं की परवाह किए बगैर उन्होंने आंदोलन में दृढ़तापूर्वक खड़ी रही थी.

घर में उन्हें पढ़ाई नसीब नहीं हुई थी. गुरिल्ला बनने के बाद पढ़ाई पर बहुत ध्यान देती थीं. पार्टी द्वारा संचालित मोबाईल अकादमिक स्कूल में वह दो बार शामिल हुई.

2014 लोकसभा चुनाव के मौके पर पुलिस के ऊपर किए गए सफल हमले में कामरेड बाली शामिल हुई. नैगुंडा आपर्चुनिटी एंबुश में भी उनकी भागीदारी थी. इनके अलावा कोडसेपल्ली, एर्रागड्डा, दोडगेर, शिंदे, कोनिंजेड, एलारम, सोमनपल्ली, कोडेकसा, मुक्केला, पल्ले के पास दस्ते के मुकाम पर हुए हमलों का उन्होंने सामना किया. हर फायरिंग में कमांडर के काशन का हिम्मत के साथ पालन किया. दोडगेर फायरिंग में घायल होने वाले कमांडर को सुरक्षित रिट्रीट कराने में कामरेड जानकी ने हिम्मत के साथ मदद दी.

कसनूर–तुमिरगुंडा हमले में घायल होने के बाद उन्होंने अपने हथियार को दूसरे कामरेडों को सौंप कर, शहादत को पाया.

कामरेड जानकी अमर रहें!

कामरेड बाली मडावी (अनिता)

कामरेड अनिता दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील, पेरिमिल एरिया, टेकला गांव में पैदा हुई थीं. एमिलिकस्सा लोक बिरादरी स्कूल में 8वीं तक पढ़ाई की. पढ़ाई के दौरान वह वालीबाल खिलाड़ी थीं. जिला टीम में भी उन्होंने जगह हासिल की. राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में भी उन्होंने भाग लिया. पढ़ाई में भी होशियार होने की वजह से सभी शिक्षक कामरेड अनिता के प्रति स्नेह भरा व्यवहार रखते थे.

पढ़ाई और खेल में होशियार होने के बावजूद वह अपने गांव में मजबूती से मौजूद कबिलाई रीति रिवाज का शिकार हुई. पारंपरिक रीति रिवाज के अनुसार बचपन में

ही उनकी सगाई हुई थी. लेकिन बाद में कामरेड अनिता ने उस शादी को ठुकरा दिया. जिसे सहन न करने वाले कामरेड अनिता के बाप ने केर्दे बनाने के लिए अपनी बेटी के बाल काट दिए. (जो युवती अपनी इच्छा के विरुद्ध की जानी वाली शादी का इनकार करती है उस पर 'केर्दे' (आवारा) मुहर लगाई जाती है. ऐसे लोगों को घर में रहने नहीं देते हैं. जंगल में छुप छुप कर भटकते रहने उन्हें मजबूर किया जाता है. किसी को दिखने पर उन पर पत्थर फेंका जाता है. क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा इस अमानवीय संस्कृति का उन्मूलन करने के बावजूद बची–खुची जगहों पर कमजोर रूप में ही सही यह रीति रिवाज मौजूद है) रस्सी से बांध कर कामरेड अनिता के साथ बुरी तरह मार–पीट भी की गई. आखिर उन्हें जबर्दश्ती छत्तीसगढ़ राज्य, कर्कानारु जहां उनकी सगाई की गई भेज दिया गया. लेकिन कामरेड अनिता राजी नही हुईं. वहां के गुरिल्ला दस्ते से मिल कर अपनी तकलीफें बतायी. क्रांतिकारी आंदोलन के हस्तक्षेप से उन्होंने अपना विवाह बंधन तोड़ कर आजादी पायी. उस क्रम में आदिवासी महिलाओं के ऊपर जारी कबीलाई रीति रिवाज व पितृसत्ता को खतम करने का रास्ता कामरेड अनिता को समझ में आया. उस रास्ते पर कदम रखने में उन्होंने कोई देर नहीं की. सितंबर, 2013 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. पांच वर्ष तक पेरिमिल एरिया जहां वह पली–बढ़ी थीं, में काम किया. थाईराइड बीमारी की वजह से वह परेशान थीं. इसके बावजूद वह अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की कोशिश किया करती थीं.

कामरेड अनिता अमर रहें!

कामरेड मैनी मडावी (मंदा)

कामरेड मंदा दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, अहेरी तहसील, कोडेकसा गांव में पैदा हुई थीं. मां–बाप की पांच संतानों में वह दूसरी थीं. उनके तीन भाई और एक छोटी बहन है. 2016 में वह अहेरी दस्ते में भर्ती हुईं. उसी वर्ष कवटारम के पास दस्ते के मुकाम पर दुश्मन द्वारा किए गए हमले में वह घायल हुई थीं. घायल होने के बावजूद हिम्मत के साथ वह अपनी बंदूक और सामान पकड़ कर कमांडर के काशनों का पालन करते हुए सुरक्षित रिट्रीट हुई. उस समय चारों तरफ पुलिस गश्त लगातार जारी रहा. इसके बावजूद वह हिम्मत के साथ अपने दर्द को सहन किया. वह बेहद मेहनती कामरेड थीं. कमांडरों द्वारा कामरेड मंदा को यह कहने की कोई जरूरत नहीं पड़ती थी कि यह काम करो या यह बोझ उठाओं. उच्च कम्युनिस्ट चेतना के साथ वह अपने आप करती थीं. अनुशासन के बारे में उन्हें बताने की कोई जरूरत नहीं होती थी. रोजमर्रा गुरिल्ला जिंदगी में हर काम में वह सक्रिय रूप से शामिल होती थीं.

घर में पढ़ाई नसीब नहीं होने के बावजूद समष्टि पढ़ाई और सभा समारोहों में सुनने वाले विषयों को न सिर्फ अच्छी तरह याद रखती थीं बल्कि जनता को भी बताने की कोशिश करती थीं. वह सभी लोगों के साथ मिल जुल कर रहती थीं.

कसनूर घटना में घायल होने के बावजूद वह दुश्मन के साथ लड़ती रही थीं. कामरेड मंदा हंसते–हंसते शोषित–उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड मंदा अमर रहें!

कामरेड पूनेम बुज्जी (क्रांति)

कामरेड क्रांति बीजापुर जिला, गंगालूर एरिया, कोरचोली गांव में पैदा हुई थीं. वह जनताना सरकार स्कूल में चौथीं तक पढ़ाई की. गांव में रहते समय सीएनएम में उन्होंने अपना योगदान दिया.

2015 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गई. वह जहां पली–बढ़ी थी, उस इलाके को छोड़ कर आंदोलन की जरूरत के अनुसार गढ़चिरौली आंदोलन में शामिल हुईं. दो वर्ष तक वह सब जोन के तकनीकी विभाग में कार्यरत थीं. बाद में उनका तबादला दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन में हुआ था. वहां पलटन–7 में उन्होंने काम किया. सैनिक कार्रवाइयों में वह हिम्मत के साथ भाग लेती थीं. 2016 में हित्तापाडी गांव में डेरे के ऊपर जब दुश्मन द्वारा हमला किया गया उस दौरान संतरी पोस्ट पर तैनात कामरेड क्रांति ने हिम्मत के साथ फायरिंग करके दुश्मन को रोक दिया. पल्ले गांव के पास दुश्मन द्वारा किए गए हमले का भी हिम्मत के साथ प्रतिरोध करते हुए वह सभी कामरेडों के साथ सुरक्षित रिट्रीट हुई थी.

कामरेड क्रांति अमर रहें!

कामरेड सोनी उसेंडी

कामरेड सोनी दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, भामरागढ़ तहसील, पेरिमिल एरिया, केहकापर्री गांव के मध्यम किसान परिवार में पैदा हुई थीं. उनका एक छोटा भाई है. उन्होंने

चौथीं तक पढ़ाई की. मां की बीमारी की वजह से बीच में ही उसने पढ़ाई छोड़ दी. बाद में घरेलू व खेती कामों में मां–बाप का हाथ बंटाते हुए गांव की सीएनएम में भी काम करती थीं. 2016 में पेरिमिल दस्ते में वह भर्ती हुईं. उस दौरान कामरेड सोनी के पिता ने अपनी बेटी को पार्टी में अच्छी तरह काम करने और कभी पीछे न मुड़ने की बात कही थी. भर्ती होने के बाद दो साल तक उन्होंने अपने ही एरिया में काम किया. 2018 में अहेरी में कार्यरत पीएल–14 में उनका तबादला हुआ. वहां काम करते समय ही उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड सोनीं अमर रहें!

कामरेड लक्ष्मण गोटा (अजय)

कामरेड अजय दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, पेरिमिल एरिया, एटापल्ली तहसील, पैमा गांव के माडिया गोंड परिवार में 25 वर्ष पहले पैदा हुए थे. उसका मध्यम किसान परिवार था. उन्होंने बूर्गी गांव में धर्माराव आश्रम शाला में 8वीं तक पढ़ाई की. उनकी क्रांतिकारी जिंदगी की शुरूआत मिलिशिया के जरिए हुई. मिलिशिया कमांडर का पद भार भी उन्होंने संभाला. वह अपने गांव में गठित जनताना सरकार के रक्षा विभाग के इंचार्ज रहे. पंचायत मिलिशिया कमांड के कमांडर इन चीफ जिम्मेदारी निभा कर उन्होंने मिलिशिया को सक्रिय व सक्षम बनाने के लिए कड़ी मेहनत की. उनकी सक्रियता को देख कर 2013 में पार्टी सदस्यता दी गई. 2017 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. इस धरती पर जारी लूट–शोषण, जुल्म–अत्याचार को खत्म करके सभी लोगों के समान हिसाब से जीने के समाज की स्थापना के लिए कामरेड अजय ने अपनी जवानी को अर्पित किया.

कामरेड अजय अमर रहें!

कामरेड साईनाथ मडावी (विजय)

दक्षिण गढ़चिरौली डिविजन, पेरिमिल एरिया, एटापल्ली तहसील, पैमा गांव में गरीब किसान परिवार में 18 वर्ष पहले कामरेड विजय का जन्म हुआ. गांव में रहते समय पंचायत जनताना सरकार की रक्षा के लिए गठित मिलिशिया पलटन में उन्होंने काम किया. 2017 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. गरीब आदिवासी जनता की जिंदगी में बदलाव लाने जल, जंगल, जमीन पर जनता के अधिकार को कायम रखने के मकसद से उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड विजय अमर रहें!

ये – बहादुर थे
जिंदादिल थे
इन्होंने
मिटाया फासले को
जिंदगी और मौत के बीच
मरकर भी जिंदा हैं
जनता के दिलो–दिमाग में.
ये – जियें, सिर्फ जीने के लिए नहीं
लड़ना ही जीना था, इनका
ये – निकले थे, कफन बांधकर
संजोये थे, सपने समतामूलक समाज के
ये – जियें, उस सफर में
जो पहाड़ों–पगडंडियों
घाटियों–चोटियों
जंगलों, मैदानों, शहरों से गुज़रता
फहराने जारी है,
लाल किले पर लाल झंडा
ये – मरे, लड़कर वह लड़ाई
जो जारी है,
जिंदगी की जीत के लिए
ये – डरे नहीं, मौत से
बने हैं, मृत्युंजय
मात देकर मौत को
ऐ साथियों!
जारी है, लड़ाई अभी
जारी रहेगी
तुम्हारे सपनें साकार होने तक
अंतिम जीत तक.

लोदेड–आईपेटा अमर शहीदों को लाल–लाल सलाम!

शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए जनयुद्ध को तेज करो!

छत्तीसगढ़ की भाजपा–तेलंगाना की टीआरएस सरकारों ने संयुक्त रूप से बीजापुर जिले के लोदेड–आईपेटा जंगल में 27 अप्रैल के सबेरे पीएलजीए की टुकड़ी पर ग्रेहाउंड्स व डीआरजी गुंडों द्वारा हमला करवाया. इस दौरान अंधाधुंध गोलीबारी की गई. बड़े पैमाने पर यूबीजीएल शेल्स, ग्रेनेड्स, रॉकेट्स का प्रयोग किया गया. अश्रु गैस के गोले भी फेंके गए. इस भीषण हमले में कई कामरेड्स बुरी तरह घायल हो गए थे. हत्यारे पुलिस बलों ने घायल साथियों को बेरहमी से यातनाएं देकर आखिर उन्हें गोलियों से भून डाला था. मृत कामरेडों को हेलिकॉप्टर से बीजापुर सरकारी अस्पताल ले जाया गया. पुलिस बलों की असीम अमानवीयता यह थी कि जिन 8 साथियों को लाश समझ कर वे ले गये थे, उनमें से 2 महिला कॉमरेड्स जिंदा ही थीं. उन्हें बीजापुर पुलिस लाईन में ले जाकर और एक बार यातनाएं देकर पुलिस ने उनकी निर्मम हत्या की.

पुलिस के इस हमले का पीएलजीए योद्धाओं ने बहादुराना तरीके से मुकाबला कर ग्रेहाउंड्स के चार जवानों को गंभीर घायल किया. इस हत्याकांड में कामरेड्स वेलादी कमली, वेट्टी अनिता, मड़काम कोसी, उईका मासे, ओयामी कमली, आलम कमला, हेमला सुखमन और कारम रघू शहीद हुए. इन तमाम शहीदों को नम आंखों से श्रद्धांजली अर्पित करते हैं. शोषण–अत्याचार, भेदभाव के खिलाफ संघर्ष जारी रखते हुए नव जनवादी क्रांति को सफल बनाने की शपथ लेते हैं. उनकी आदर्शवान जीवनियों के बारे में जान लेते हैं.

कामरेड वेलादी कमली

कामरेड वेलादी कमली ने पश्चिम बस्तर डिविजन, नेशनलपार्क एरिया, पाल्सेगुंडापुर गांव के एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लिया. मां मासे व बाप फड़गल की छह संतानों में कामरेड कमली सबसे छोटी थीं. कामरेड कमली अपने पीछे तीन बहन और दो भाईयों को छोड़ गईं. कामरेड कमली ने बचपन में ही क्रांति की राह पकड़ी. उन्होंने बाल संगठन में अपना योगदान दिया. जवान होने के बाद केएएमएस में भर्ती हुईं. उसमें काम करते हुए अपनी चेतना बढ़ा कर 2010 में पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. पहले उनकी नियुक्ति डीवीसी की सुरक्षा गार्ड के रूप में हुई थी. 2012 में उनका तबादला पीएल–11 में हुआ था. कामरेड कमली के भाई के पार्टी व क्रांतिकारी जनता को धोखा देकर गद्दार बनने के बावजूद वह क्रांति में दृढ़तापूर्वक खड़ी रही.

कुछ सैनिक कार्रवाइयों में भी कामरेड कमली की भागीदारी थी. 2013 में विधानसभा चुनाव बहिष्कार के दौरान नुकानपल्ली के पास पीएलजीए द्वारा किए गए एंबुश में वह शामिल हुई थीं. 2015 में गोटूम गांव के ऊपर हमला करके जाने वाले दुश्मन बलों पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में उनकी भागीदारी थी. कंदुलनार, सागमेट्टा और गुंडाम फायरिंग में भी वह शामिल हुई थीं. इनके अलावा डेरों पर कई बार दुश्मन द्वारा किए गए हमलों में वह हिम्मत के साथ लड़ते हुए रिट्रीट हुईं. आईपेटा के पास दुश्मन के एंबुश में फंसने के बावजूद कामरेड कमली हिम्मत के साथ लड़ते हुए शहीद हुईं.

कामरेड कमली अमर रहें!

कामरेड वेट्टी अनिता

दक्षिण बस्तर डिविजन के बुसामपुरम के एक गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड अनिता का जन्म हुआ था. लेकिन मद्देड एरिया के धारूम गांव में वह पली–बढ़ी थीं. वह मां सोमडी और बाप मोसु की दूसरी संतान थी. उनके चार भाई और एक बहन हैं. बचपन से ही वह सभी कामों में मां–बाप का हाथ बंटाती थीं. सीएनएम के जरिए उनकी क्रांतिकारी जिंदगी की शुरुआत हुई थीं. 2010 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनीं. कुछ वक्त के लिए कामरेड अनिता ने इन्स्ट्रक्टर टीम में अपना योगदान दिया. बाद में उनका तबादला मद्देड एलजीएस में हुआ था. उस दस्ते में उन्हें डॉक्टर जिम्मेदारी दी गई. उन्होंने दो महिला विशेष बैठकों में भाग लिया. एक राजनीतिक कक्षा और एक मिल्ट्री कैंप में भी भाग लिया.

2013 में नेलमडुगू गांव में डेरे पर हुए पुलिस हमले का हिम्मत से मुकाबला करते हुए वह सुरक्षित रिट्रीट हुईं. उसी वर्ष बोगला गांव में डेरा पर हुए पुलिस हमले में भी

कमांडर के आदेशों का सटीक पालन करते हुए रिट्रीट हुई. 2015 में गोटूम गांव के ऊपर हमला करके वापस जाने वाले दुश्मन बलों पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में वह शामिल हुई थीं. नवंबर 2016 में नेलमडुगू गांव में डेरे के ऊपर किए गए पुलिस हमले का प्रतिरोध करते हुए नेतृत्वकारी कामरेड को सुरक्षित निकालने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा. इस वर्ष जनवरी में नारायणपुर जिले के इरपानार के पास पुलिस के ऊपर पीएलजीए द्वारा किए गए एंबुश में भी कामरेड अनिता शामिल हुई थी.

आईपेटा–लोदेड के पास दुश्मन के साथ डट कर लड़ते हुए कामरेड अनिता ने शहादत को पाया.

कामरेड अनिता के परिजन और ग्रामीण मिल कर बीजापुर जाकर पुलिस के साथ लड़–भिड़ कर उनकी लाश लाए. सैकड़ों जनता ने नम आंखों से कामरेड अनिता को श्रद्धांजलि अर्पित करके उनके अधूरे सपनों को पूरा करने की शपथ लेते हुए उनका अंतिम संस्कार किया.

कामरेड अनिता अमर रहें!

कामरेड ओयम कमली

कामरेड कमली पश्चिम बस्तर डिविजन गंगालूर एरिया, पोरमुल गांव के एक गरीब परिवार में 19 वर्ष पहले जन्मी थीं. वह मां बाप की प्रथम संतान थी. उनके पीछे तीन बहन और दो भाई हैं. कामरेड कमली के मां–बाप पर्याप्त जमीन नहीं होने की वजह से बच्चों को लेकर गुंडम गांव जाकर वहां कुछ जमीन हासिल करके जीवनयापन कर रहे हैं. गुंडम गांव में ही कामरेड कमली की क्रांतिकारी जिंदगी की शुरुआत हुई. पहले उन्होंने बालक संगठन में काम किया. जवान होने के बाद केएएमएस में भर्ती होकर अपने गांव की महिलाओं को संघर्षरत करने में अपना योगदान दिया. उसी वक्त मां–बाप ने कामरेड कमली की इच्छा के विरुद्ध उनकी शादी की. उसका विरोध करते हुए कामरेड कमली 2014 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुई थीं. उनकी नियुक्ति मद्देड एलजीएस में हुई थी. वह अनुशासन के साथ गुरिल्ला दस्ते के रोजमर्रा के क्रियाकलापों में शामिल होती थीं. कमांडर के आदेशों का सटीक पालन करती थीं. ध्यान से पढ़ाई सीखती थीं. वहां की जनता की बोली–भाषा सीखते हुए उन्होंने जनता के साथ घनिष्ठ संबंध बना लिया. जनवरी, 2016 में पुन्नूर और नवंबर, 2016 में नेलमडगू में दुश्मन द्वारा डेरे पर किए गए हमले में कामरेड कमली हिम्मत के साथ दुश्मन का मुकाबला करते हुए रिट्रीट हुईं.

आईपेटा–लोदेड घटना में दुश्मन का सामना करते हुए कामरेड कमली ने शहादत को पाया. कामरेड कमली की शहादत की खबर सुनते ही उनके परिजन और ग्रामीण बीजापुर जाकर चार दिन संघर्ष करके उनकी लाश अपने गांव लाये. सैकड़ों संख्या में इकट्ठी होकर जनता ने क्रांतिकारी रीति रिवाज के साथ कामरेड कमली का अंतिम संस्कार किया. उनके आशयों को आगे बढ़ाने की शपथ ली.

कामरेड कमली अमर रहें!

कामरेड मडकम कोसी

कामरेड मडकम कोसी पश्चिम बस्तर डिविजन, मद्देड एरिया, पंगोड गांव के एक गरीब परिवार में 18 वर्ष पहले पैदा हुई थीं. मां सिंगली एवं बाप मासाल की छह संतानों में वह सबसे बड़ी थीं. वह अपने पीछे दो बहनें और तीन भाईयों को छोड़ गईं. पर्याप्त जमीन नहीं होने के कारण कामरेड कोसी का परिवार कट्टेकल्यान ब्लॉक, लाखरास गांव से पलायन करके पंगोड आया हुआ था. यहां कुछ जमीन हासिल करके मेहनत करते हुए गुजर बसर कर रहा है. कामरेड कोसी न सिर्फ सभी कामों में मां–बाप का हाथ बंटाती थी बल्कि गांव के सामूहिक काम में हंसी खुशी से शामिल होती थीं. बाल संगठन में भर्ती होकर उन्होंने क्रांति के बारे में जानना शुरू किया. बाद में सीएनएम में शामिल होकर जनता में क्रांति के बारे में प्रचार किया. उस क्रम में अपनी चेतना व प्रतिबद्धता को और बढ़ा कर जुलाई, 2017 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. उनकी नियुक्ति मद्देड एलजीएस में हुई थी. कामरेड कोसी होशियार, मेहनती व अनुशासित कामरेड थीं. वह सामूहिक कामों में हंसीखुशी से शामिल होती थीं. पढ़ाई पर ध्यान देकर सीखती थीं. सभी लोगों के साथ मिलजुल कर रहती थीं. वहां के लोगों की बोली सीख कर उनके साथ मिलजुल कर रहती थीं.

कामरेड कोसी की पीएलजीए जिंदगी को एक वर्ष भी पूरा नहीं हुआ, इतने में ही उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड कोसी के परिजन व गांव वाले बीजापुर जाकर शासन–प्रशासन के साथ संघर्ष करके उनकी लाश अपना गांव लाये. सैकड़ों की तादाद में एकजुट हुई जनता ने कामरेड कोसी को श्रद्धासुमन अर्पित किया. क्रांतिकारी

रीति रिवाजों के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया.

कामरेड कोर्सी अमर रहें!

कामरेड उईका मासे

पश्चिम बस्तर डिविजन, मद्देड एरिया, बेल्लम नेंड्रा गांव के मध्यम वर्गीय परिवार में कामरेड मासे पैदा हुई थीं. वह मां देवे एवं बाप देवाल की तीसरी संतान थीं. वह अपने पीछे दो बहन और एक भाई को छोड़ गईं. कामरेड मासे की बड़ी बहन भी पेशेवर क्रांतिकारी हैं. कामरेड मासे बचपन से ही घरेलू व खेती काम में मां–बाप का हाथ बंटाते हुए गांव में संचालित क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होती थीं. इस क्रम में लूट, शोषण के बारे में उन्होंने समझ लिया. न सिर्फ उनके बल्कि उनके आस पास के गांवों में जारी दमन को देख कर उनके मन में सरकार के प्रति घृणा पैदा हुई. ऐसी सरकार के खिलाफ लड़ने का निर्णय लेकर नवंबर, 2017 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गईं. फरवरी, 2018 से वह मद्देड एलजीएस में कार्यरत थीं. कुछ ही वक्त में उन्होंने शहादत को पाया. छोटी उम्र में ही महान कुरबानी करने वाली कामरेड मासे कामरेड्स व जनता के हृदयों में हमेशा जीवित रहेंगी.

कामरेड मासे अमर रहें!

कामरेड हेमला सुखमन

पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ एरिया, मिरतुल थाना के नजदीक पुल्लादी गांव के एक गरीब परिवार में कामरेड सुखमन का जन्म हुआ. उनकी मां मल्ली है और बाप आयतू. वह अपने पीछे एक बड़ी बहन, दो भाईयों को छोड़ गये. वह बचपन से ही सभी कामों में मां–बाप का हाथ बंटाते थे. बाल संगठन में भर्ती होकर जनता की सेवा करते हुए उन्होंने अपनी चेतना को बढ़ाया. क्रांतिकारी नाच–गाने के प्रति उनका लगाव देख कर बाद में उनकी नियुक्ति सीएनएम में की गई. दिसंबर, 2015 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बने. बाद में 6–7 महीने तक उन्होंने जन मिलिशिय में अपना योगदान दिया. बाद में डिविजन आरटी में साढ़े तीन साल काम किया. उसके बाद उनका तबादला पीएल–11 में हुआ था.

कई सैनिक कार्रवाइयों के दौरान रेक्की करके पीएलजीए को सूचना पहुंचाने में कामरेड सुखमन की भूमिका रहीं. सूचना पाने के लिए कड़े धूप में सफर करते हुए उन्हें कई तकलीफों को उठाना पड़ता था. कभी–कभी पानी भी नहीं मिलता था. इसके बावजूद उन्होंने दृढ़तापूर्वक अपनी जिम्मेदारी निभाई.

कामरेड सुखमन नवंबर, 2017 में नेशनलपार्क एरिया के गुंडम के पास हुई फायरिंग में शामिल हुए थे. उस घटना में दो कामरेड्स शहीद होने के बावजूद वह हिम्मत से कमांडर के आदेशों का पालन करते हुए बाकी कामरेडों के साथ रिट्रीट हुए. इसके अलावा कई छोटी कर्रवाइयों में उन्होंने भाग लिया.

कामरेड सुखमन अमर रहें!

कामरेड आलम कमला

पश्चिम बस्तर डिविजन भैरमगढ़ एरिया पोटेनार के एक गरीब परिवार में 21 वर्ष पहले कामरेड कमला का जन्म हुआ. वह मां बटाई और बाप कल्लू की छोटी बेटी थी. कामरेड कमला की एक बहन और एक भाई हैं. बचपन में ही बीमारी के चलते कामरेड कमला के मां–बाप की अकाल मृत्य हुई थी. कामरेड कमला ने दूसरी कक्षा तक पढ़ाई की. बाद में गरीबी के कारण पढ़ाई छोड़ कर बहन व भाई के साथ खेती काम किया करती थीं. बचपन में ही कामरेड कमला क्रांति के प्रति आकर्षित हुईं. बाल संगठन में भर्ती होकर उन्होंने क्रांति की सेवा की. अपने गांव में आयोजित सभी क्रांतिकारी कार्यक्रमों में शामिल होते हुए अपनी चेतना को विकसित करते हुए दिसंबर, 2013 में माटवाडा एलओएस में भर्ती हुईं. फरवरी, 2014 में उन्हें मद्देड में कार्यरत पलटन–17 में स्थानांतरित किया गया. वह पीएलजीए के अनुशासन का सटीक पालन करती थीं. अपनी राजनीतिक समझदारी बढ़ाने के लिए डिविजन पार्टी द्वारा प्रकाशित पर्चे और मिड़ंगूर पत्रिका ध्यान से पढ़ती थीं. तेलुगु, हिंदी और दोरला भाषा सीखने के लिए बहुत ही कोशिश करते हुए वह जनता के साथ घुलमिल होती थीं. मद्देड एरिया में मौजूद कठिन परिस्थिति में उन्होंने हिम्मत के साथ काम किया. दुश्मन की आत्मसमर्पण

नीति का विरोध करते हुए जनता व क्रांति के प्रति अटल विश्वास के साथ वह क्रांति में आगे बढ़ती रहीं.

कामरेड कमला अमर रहें!

कामरेड कारम रघु

कामरेड कारम रघु पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया, एड्समेट्टा पंचायत, कारूम गांव के एक गरीब परिवार में 17 वर्ष पहले पैदा हुए थे. उनकी मां का नाम आयते और बाप का नाम आयतू है. वह अपने पीछे तीन बहन और दो भाईयों को छोड़ गए. बचपन से ही कामरेड रघु सभी कामों में मां–बाप का हाथ बंटाते थे. दूसरी ओर बाल संगठन में अपनी सेवाएं देते थे. जवान होने के बाद डीएकेएमएस में काम करते हुए उन्होंने आरपीसी डॉक्टर की जिम्मेदारी भी निभाई. मिलिशिया पीएल के सदस्य रह कर जनता की रक्षा में अपना योगदान दिया. दिसंबर, 2017 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. जनवरी, 2018 में उन्हें मद्देड एरिया में भेज दिया गया. वहां जाने के 4 महीने के भीतर ही उन्होंने शहादत को पाया.

कामरेड रघु अमर रहें!

❍❍❍

कामरेड वेको कमलू (राजू)

राजनांदगांव जिले के सुकतरा गांव में काम पर गए कामरेड वेको कमलू (राजू) को नंदू नामक और एक कामरेड के साथ 28 जून, 2017 को पुलिस ने दबोचा. बेरहमी से यातनाएं देने के बाद दोनों कामरेडों की हत्या की गई.

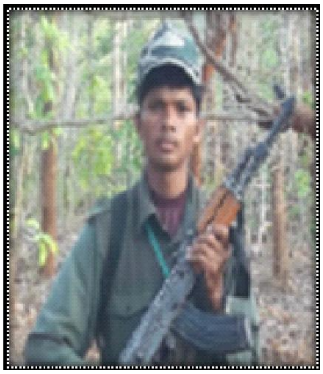

कामरेड राजू पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ इलाके के पिट्टेतुंगाल गांव के निवासी थे. पर्याप्त जमीन नहीं होने की वजह से उनका परिवार जगदलपुर के नजदीक के नेंडुम गांव से पलायन करके इस गांव में बस गया था. पायके–वेको सुकलू दंपति की छह संतानों में कामरेड कमलू सब से बड़े थे. बचपन से ही होशियार कामरेड कमलू को 2006 में बाल संगठन के अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई. उस हैसियत से उन्होंने गांव के बच्चों को क्रांतिकारी रास्ते में लाने की कोशिश की.

कामरेड कमलू के काम काज को देख कर 2008 में उन्हें मिलिशिया पलटन में भेजा गया. उसमें काम करते हुए उन्होंने गांव और जनताना सरकार की रक्षा में अपना योगदान दिया. अपनी चेतना और कार्य क्षमता को विकसित करते हुए 28 जुलाई, 2011 को वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. कुछ वक्त के लिए वे भैरमगढ़ इलाके में कार्यरत माटवाड़ा एलओएस के सदस्य रहे. 2012 में उनकी नियुक्ति इन्स्ट्रक्टर टीम में हुई थी. 2013 में उनका तबादला डिविजन समन्वय दस्ते में हुआ था. सितंबर, 2015 को उनका तबादला एमएमसी (महाराष्ट्र–मध्यप्रदेश–छत्तीसगढ़) में किया गया था. नये इलाके होने के बावजूद उन्होंने सहर्ष उस तबादला प्रस्ताव को स्वीकार किया. उस इलाके में क्रांति के बीज बोते हुए उन्होंने अपनी अनमोल जान को न्योछावर किया.

कामरेड राजू अमर रहें!

कामरेड आवलम मंगली

15 सितंबर, 2017 को उत्तर गडचिरोली डिविजन, सातगांव क्षेत्र के भेंडी गांव के पास सी–60 कमांडों के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड मंगली (22) की शहादत हुई.

कामरेड मंगली का जन्म पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर क्षेत्र के पिड़िया गांव में हुआ था. छोटी उम्र में ही क्रांति का रास्ता अपना कर वह बाल संगठन में भर्ती हुई थी. जवान होने के बाद केएएमएस और मिलिशिया में उन्होंने काम किया. गांव की रक्षा, जनांदोलन और जनता में राजनीतिक प्रचार करने में उनकी भागीदारी थी. क्रांतिकारी रास्ते में और आगे बढ़ने के मकसद से जुलाई, 2014 में वह पूर्णकालीन क्रांतिकारी बनीं. उसके बाद एक वर्ष तक जनताना सरकार की एक आश्रम पाठशाला में रसोइया के तौर पर उन्होंने अपना योगदान अदा किया. उस दौरान मिले वक्त का सटीक इस्तेमाल करते हुए उन्होंने पढ़ाई भी हासिल की.

2015 में उनका तबादला उत्तर गडचिरोली में किया गया. उस डिविजन के सातगांव एलओएस की सदस्या बन कर जनता को गोलबंद करने में उन्होंने अपनी भूमिका निभाई. वह गुरिल्ला अनुशासन का सटीक पालन करती थीं. गढ़चिरौली की गोंडी भाषा सीख कर जनता के साथ घुलमिल गयी थीं. राजनीतिक किताबें पढ़ते हुए अपनी चेतना को बढ़ाने की कोशिश करती थीं. क्रांतिकारी जीवन के अपने छोटे से कार्यकाल में ही उन्होंने सातगांव एरिया की जनता के बीच में अपनी छाप छोड़ गयी.

कामरेड मंगली अमर रहें!

कामरेड मन्नू मट्टामी (किस्मत)

कामरेड मन्नू मट्टामी (रिंकू, किस्मत) की शहादत 28 जनवरी, 2018 को बूबी ट्राप की दुर्घटना से हुई. इनकी

शहादत से पीएलजीए ने एक नव विकसित कम्युनिकेशन निपुण को खोया. उनकी शहादत ने अपने यूनिट के तमाम साथियों को गहरे दुख में डुबो दिया.

कामरेड मन्नू का जन्म छत्तीसगढ़ राज्य, नारायणपुर तहसील, टेकामेट्टा गांव में 24 साल पहले हुआ था. उनका गरीब माडिया गोंड परिवार था. अपनी माता दसो और पिता सुक्कू की पांच संतानों में यह मंझले बेटे थे. गरीबी के चलते उन्हें बचपन में स्कूल जाने का मौका नहीं मिला. बचपन से ही उन्हें पार्टी के साथ लगाव था. 12 साल की छोटी उम्र में पेशेवर बनने का जिद पकड़ा तो समझा बुझा कर दो साल तक घर में रुकवाने के बाद 2009 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बने थे. उनकी उमर को देखते हुए साल भर सप्लाई दल के साथ रखा गया था. बाद में साल भर सब जोनल टीडी यूनिट के साथ रहते हुए बंदूक बनाना सीख लिया. पढाई में उनकी होशियारी व रुचि को देखते हुए बीसीटीएस में भेजा गया था. वहां से लौटकर कम्बाट बलों में काम करने की उनकी इच्छा के मद्देनजर उनका कंपनी–10 में तबादला किया गया. 2011 आखिरी से कंपनी में शामिल होकर काम करने लगे. दो साल कंपनी–कमांडर के सुरक्षा गारद रहे. 2013 से उन्होंने कम्युनिकेशन की जिम्मेदारी ली. दुश्मन की सूचनाओं को इकट्टा करना, एंबुश के दौरान बैचों के बीच समन्वय के लिए आवश्यक सूचनाओं का आदान–प्रदान करना आदि कामों को बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाते रहे. एक गरीब, घर में अनपढ़ साधारण लड़का सुशिक्षित तकनीशियन की जिम्मेदारी निभाने तक विकसित हुआ. उनके अंदर सीखने की प्रबल इच्छा थी. उन्होंने जो भी सीखा उसे अपने कामकाज में इस्तेमाल किया. टार्च लाईट से लेकर सोनी रेडियो तक, मोटरोला से से लेकर रिमोट, बूबी ट्राप्स तक सभी पर उन्होंने अच्छी पकड़ हासिल की. बोझ उठाने में अपने आप को बेमिसाल साबित किया. कम्युनिकेशन का पूरा का पूरा सामान वे अकेले किट में समेटकर ढोकर ले जाते थे. उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती थी, उसे पूरा होने तक झपकी तक नहीं लेते थे. जो कुछ सीखा, उसे दूसरों को सिखाने की उनकी प्रबल इच्छा रहती थी.

सैनिक कार्यवाहियों के दौरान लाल योद्धा की हैसियत से हिम्मत के साथ खड़े होकर दुश्मन के हमले का कड़ा प्रतिरोध करते थे. कुरेनार एंबुश के समय स्टाप पार्टी के साथ रहकर उन्होंने दुश्मन को आगे बढ़ने नहीं दिया. 2012 से लेकर 2018 तक मौके–मौके पर लिए गए विशेष प्रतिरोध अभियानों सहित तमाम कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों में वे शामिल हुए थे. आशा, मूसपर्सी, अवलवर्षा जैसे सफल सैनिक कार्यवाहियों में पूरी कंपनी के साथ मिलकर उन्होंने अपनी भूमिका बखूबी निभाई. अपने मुक़ाम पर हुई फायरिंग हो या एंबुश, अपार्चुनिटी एंबुश, सिंगल एक्शन, रोड टीम – मोर्चा जो भी हो डटकर खड़े होते थे. एक अनुशासन युक्त योद्धा जैसे अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते थे.

अपने 10 साल की कठोर क्रांतिकारी जिंदगी में छोटी–मोटी परेशानी, तनाव जो भी आया हो उसे संयम के साथ समझने का प्रयास किया. दुश्मन के हमले से डरे कुछ कमांडरों के पीठ दिखाकर भागने पर भी वे अपने लक्ष्य पर अडिग रहे. जनता के साथ मिलजुलकर रहते हुए हर पल क्रांति संघर्ष को आगे ले जाने के लिए काम करनेवाले आदर्श योद्धा कामरेड किस्मत जनता के दिलों और दिमागों में सदा जिंदा रहेंगे.

कामरेड किस्मत अमर रहें!

कामरेड श्याम सिंग होडी (कमलेश)

गढ़चिरौली जिला, कसनसूर एरिया के ताडपल्ली गांव के पास गुरिल्ला दस्ते के मुकाम पर 10 जनवरी, 2018 को पुलिस द्वारा किए गए हमले में उस वक्त संतरी पर तैनात कामरेड कमलेश की शहादत हुई.

कामरेड कमलेश गढ़चिरौली जिला, धनोरा तहसील के कोसमी गांव में 35 वर्ष पहले पैदा हुए थे. उनकी एक बड़ी बहन और एक छोटा भाई है. कामरेड कमलेश के बचपन में ही उनके पिता अगनू होडी का निधन हुआ. इसलिए कामरेड कमलेश खेती काम में बचपन से ही मां का हाथ बंटाते थे. कोसमी एक संघर्षरत गांव है. इसलिए क्रांतिकारी माहौल में कामरेड कमलेश की परवरिश हुई. 2003 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. अपनी भर्ती के समय उन्होंने और एक कामरेड को भी प्रोत्साहित करके भर्ती किया. बाद में उस कामरेड की शहादत हुई. भर्ती के बाद उन्होंने पहले टिप्रागढ़ दस्ते में काम किया. 2004 में वह डिविजन में नवगठित स्पेशल गुरिल्ला दस्ते का हिस्सा बने थे. बाद में 2006 में गठित पलटन–15 में उनका तबादला हुआ. 2008 में उन्हें पीपीसी में लिया गया. मर्कानार, हत्तीगोटार और मुगनेर एंबुशों में वह शामिल हुए थे.

15 वर्ष के उनके क्रांतिकारी जीवन में सामने आई कई व्यक्तिगत समस्याओं और आंदोलन के उतार–चढ़ाओं का उन्होंने दृढ़तापूर्वक सामना किया.

कामरेड कमलेश अमर रहें!

(आखिरी पेज से...)

कामरेड अशोक पेंदाम (आयतू)

अहेरी जनता के प्रिय क्रांतिकारी नेता कामरेड आयतू का जन्म 35 साल पहले गढ़चिरौली जिला, अहेरी तहसील के लिंगमपल्ली गांव में हुआ था. घर में उनकी पत्नी, दो बच्चे, बुजुर्ग माता–पिता हैं. गांव में रहते समय क्रांति के प्रति अटूट विश्वास के साथ खड़े होकर काम करते थे. उनकी प्रतिबद्धता को देखते हुए घर में रहते समय ही यानी 2001 में पार्टी सदस्यता दी गई. 2001 से लेकर 2007 तक अंशकालीन पार्टी सदस्य की हैसियत से जन संगठनों व मिलिशिया में सक्रियता से काम करते रहे. इसी दौरान पुलिस के हाथों उन्हें मार खाना पड़ा और जेल जाना पड़ा, तो भी वे पीछे नहीं हटे. वे 2007 में पेशेवर क्रांतिकारी बने. उन्होंने अहेरी–सिरोंचा एरिया कमेटी के सचिव व सिरोंचा स्थानीय गुरिल्ला दस्ते के कमांडर की जिम्मेदारी निभाई. शुरू से लेकर अपनी शहादत तक लगभग 20 साल उन्होंने भारत देश में नव जनवादी क्रांति, जो जोतने वाले को जमीन, जल–जंगल–जमीन पर आदिवासियों के जन्मजात अधिकार की गारंटी देती है, को सफल बनाने के लक्ष्य से अथक परिश्रम किया. कुछ लोगों की गद्दारी व आत्मसमर्पण आदि से वे विचलित नहीं हुए. क्रांति पर उनका विश्वास अटूट रहा. उनकी शहादत से दक्षिण गढ़चिरौली क्रांतिकारी आंदोलन ने एक जन नेता को खोया. अपने जन नेता की शहादत से हुई सदमे से अहेरी क्रांतिकारी जनता जल्द ही उबरेगी, सैकड़ों जन नेताओं को जंग–ए–मैदान में खड़ा करते हुए अपने प्यारे नेता की शहादत से हुई खाली को भर देगी.

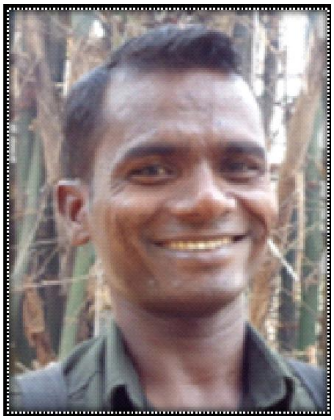

कामरेड आयतू अमर रहें!

महाक्रांति की ताल
समय का सरगम
नुपूर परिवर्तन के
और प्रगति की संगत पर
जो जीवन नृत्य करेगा
वह नहीं मरेगा
वह नहीं मरेगा
वह नहीं मरेगा

–हरिहर ओझा

कामरेड केशव पल्लो (चंदू)

सिरोंचा एरिया के जन नेता कामरेड चंदू का जन्म भामरागड़ तहसील कउंडे गांव में हुआ था. अपने माता–पिता की चार संतानों में वे ज्येष्ठ पुत्र थे. कामरेड चंदू के छोटे भाई कामरेड प्रकाश पल्लो की क्रूर सी–60 गुंडों के हमले में यानी अप्रैल, 2013 के बटपर फर्जी मुठभेड़ में शहादत हुई. अपने भाई से प्रेरणा लिए उनके छोटा भाई भी पेशेवर क्रांतिकारी की हैसियत से जनता के बीच में क्रांति के लिए काम कर रहे हैं. कामरेड चंदू घर में रहते समय चेतना नाट्य मंच के सक्रिय सदस्य रहे. 2007 में पेशेवर क्रांतिकारी बने. जब से वे पेशेवर बने तब से उनका अधिकांश क्रांतिकारी जीवन सिरोंचा में क्रांतिकारी क्रियाकलापों का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण करने में बीत गए. अहेरी एरिया कमेटी सदस्य व सिरोंचा स्थानीय गुरिल्ला दस्ते की डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी उन्होंने निभाई. शहीद कामरेड चंदू के अधूरे सपनों को पूरा करेंगे.

कामरेड चंदू अमर रहें!

कामरेड महरी आत्रम (अखिला)

कामरेड अखिला गढ़चिरौली जिला, अहेरी एरिया, कप्पवेंचा गांव में पैदा हुई थीं. महिलाओं के लिए जल–जंगल–जमीन पर समान अधिकार, अपनी संतान व संपत्ति पर अधिकार, पितृसत्ता दबाव से महिलाओं की मुक्ति, स्वेच्छा–समानता और आजादी के लिए इस शोषणमूलक समाज को बदलने के महान मंशे को लेकर 2008 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. दुश्मन के दमनकारी गश्त अभियानों के बीच

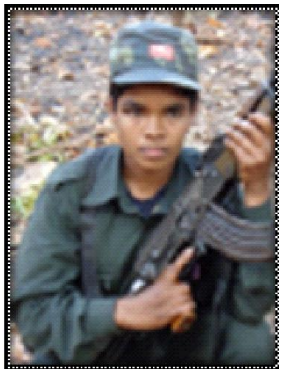

दृढ़ता से खड़ी रहीं. शहादत के वक्त वह पलटन–14 में कार्यरत थीं. क्रांति के प्रचार द्वारा महिलाओं को क्रांतिकारी राजनीति से जागृत करती थीं. वह नव विवाहिता थीं. कामरेड अखिला के अधूरे सपने को पूरा करने की दिशा में उनके साथी कामरेड्स अपने कार्याचरण को जारी रखेंगे. बड़े पैमाने पर महिलाओं को क्रांति संघर्ष में शामिल करते हुए कामरेड अखिला की शहादत से हुई खाली को भर्ती करेंगे.

कामरेड अखिला अमर रहें!

कामरेड कमला वड्डे (सरिता)

कामरेड कमला वड्डे बीजापुर तहसील, कउंडे गांव में जन्मी थीं. वो 2009 में पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. 2011 से लेकर 2016 अगस्त तक कंपनी–9 की सदस्या रही. बाद में क्रांति की जरूरतों के मद्देनजर उनका तबादला गढ़चिरौली जिले में हुआ. 2016 सितंबर से प्लाटून–7, 2017 की शुरुआत से अहेरी में कार्यरत पीएल–14 की सदस्या के रूप में काम कर रही थीं. शोषित–उत्पीड़ित विशाल जन समूहों, खास तौर पर उत्पीड़ित महिलाओं की मुक्ति के लिए क्रांति संघर्ष को आगे बढ़ाने का महान कर्तव्य पीछे छोड़कर उन्होंने अपनी जीवन यात्रा को समाप्त किया. उनके अधूरे लक्ष्य को आगे ले जाएंगे.

कामरेड सरिता अमर रहें!

कामरेड शैला कोवासी

कामरेड शैला कोवासी ने भामरागढ़ तहसील, पोक्कूर गांव में जन्म लिया. बचपन से अपने पिता रैनू कोवासी की उंगली थामकर वह गुरिल्ला दस्ते के पास आना जाना करती थीं. गाने का उन्हें बहुत शौक था. एक अच्छी कलाकार होने के नाते वह चेतना नाट्य मंच की सदस्या बनीं. वह 2015 में पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. कुछ दिन के लिए पेरिमिलि दस्ते, बाद में कंपनी–10, शहादत के समय में पीएल–14 की सदस्या के रूप में कार्यरत थीं. बचपन से क्रांतिकारी माहौल में पली बढ़ी नौजवान कामरेड शैला शोषित–उत्पीड़ित जनता की राजसत्ता, आदिवासियों को जंगल पर अधिकार, उत्पीड़ित–दमित महिलाओं की मुक्ति – आदि का परचम उठाकर क्रांति संघर्ष में कूद पड़ी. महिला विमुक्ति, स्वेच्छा, समानता, आजादी का सपना संजोकर अपनी जान की अनमोल बलिदान दी.

कामरेड शैला अमर रहें!

कामरेड कोरसा मुन्नी (विमला)

कामरेड विमला पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया के कोरमा गांव में पैदा हुई थीं. वह लक्ष्मी–लच्चू दंपत्ति की प्रथम संतान थीं. उनकी एक भाई है. बचपन में ही उनके सिर पर से पिता का साया उठ गया. बाद में उनकी मां बच्चों को साथ लेकर अपने माइके में चली गईं. कामरेड विमला का पालन–पोषण वहीं पर हुआ. 2002 में बाल संगठन में भर्ती होकर उन्होंने क्रांति में अपना योगदान दिया. 2003 में सीएनएम में, 2004 में केएएमएस में अपना योगदान दिया. 2005 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर वह गंगालूर दस्ते में भर्ती हुईं. नवंबर, 2005 में उनका तबादला तेलंगाना राज्य में हुआ था. 2006 में उनकी नियुक्ति नवगठित कंबाट पीएल में हुई थी. उस पीएल की सदस्या के तौर पर उन्होंने गोदावारी पार कर वहां की पार्टी के पुनर्निर्माण के लिए की गई कोशिशों में भाग लिया. 2010 में उन्हें एरिया कमेटी में लिया गया. पार्टी कमेटी निर्णय के मुताबिक उन्होंने कुछ वक्त तक टैलर टीम में अपना योगदान दिया. आदिलाबाद डिविजन में भी उन्होंने अपना योगदान दिया. इंद्रवेल्ली एसी सदस्या के तौर पर उन्होंने काम किया. 2013 से 2015 तक उन्होंने मंगी एरिया के डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी निभाई. 2016 में उस दस्ते की कमांडर बनीं.

तीव्र दमन के बीच में काम करने की वजह से कामरेड विमला को कई बार दुश्मन के हमलों का सामना करना पड़ा. उन हमलों का हिम्मत से मुकाबला करते हुए उन्होंने स्वयं को सुरक्षित बचा लिया. दुश्मन पर पीएलजीए द्वारा किए गए कुछ हमलों में भी उनका योगदान रहा. एक मिलिशिया कामरेड की हत्या करके भागने वाले पुलिस बलों के ऊपर माइन विस्फोट करके उन्हें घायल करने की घटना में उन्हेंने भाग लिया. 2007 में संयुक्त कमांड के

नेतृत्व में संचालित टीसीओसी में माइन विस्फोट करके दुश्मन को भगाने में वह शामिल हुई. मराईगूडेम कैंप के ऊपर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में भी उनकी भागीदारी रही.

कामरेड विमला डॉक्टर की जिम्मेदारी भी निभाती थी. साथी कामरेडों को पढ़ाती थी. साथी कामरेडों का राजनीतिक व सैनिक ज्ञान बढ़ाने की कोशिश किया करती थीं. कामरेड विमला जहां गईं वहां की भाषा सीख कर जनता से घुलमिल जाती थीं. लोगों की राजनीतिक चेतना बढ़ा कर उन्हें गोलबंद करने प्रयासरत रहती थीं. उस प्रकार उन्होंने कैडर व जनता का विश्वास जीता.

कामरेड विमला एक अच्छी कलाकारिणी भी थीं. गीतों से जनता को आकर्षित करती थीं.

कल्लेड़ा हमले में तेलंगाना आंदोलन ने एक मूल्यवान महिला कमांडर को खोया.

कामरेड विमला अमर रहें!

पूनेम सोमडू (रामू, करण)

कामरेड करण 1997 में पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया, कावाड़ी गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे.

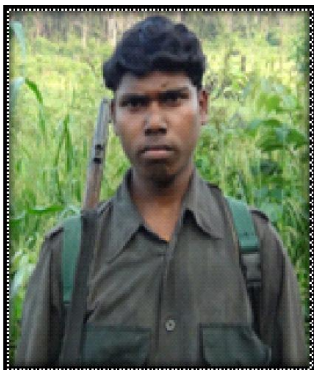

वह अपने पीछे मां, बाप, बहनें व एक छोटा भाई को छोड़ गए.

कामरेड करण ने पहले बाल संगठन में, बाद में मिलिशिया में अपना योगदान दिया. मिलिशिया में काम करने के दौरान दुश्मन के ऊपर किए गए कई हमलों में वह सक्रिय भागीदार रहे. 2013 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गए. पहले डीवीसी की सुरक्षा गार्ड के तौर पर बाद में सीसीएम के सुरक्षा गार्ड के तौर पर उन्होंने अपना योगदान दिया. खम्मम डिविजन में भी उन्होंने काम किया.

कल्लेडा में दुश्मन के घातक हमले का डट कर प्रतिरोध करते हुए कामरेड करण सुरक्षित बच निकले थे. लेकिन अगले दिन क्रूर पुलिस बलों ने उन्हें पकड़ कर यातनाएं देने के बाद उनकी निर्मम हत्या की.

कामरेड करण अमर रहें!

कामरेड सिडाम सीताबाई

कामरेड सिडाम सीताबाई आदिलाबाद जिला, जीडिपल्ली गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में 1987 में पैदा हुई थीं. वह मां भूलक्ष्मी और बाप देवराव की तीसरी संतान थीं. कामरेड सीताबाई के दो भाई और एक छोटी बहन है. सीताबाई पैदा होने के बाद उनका परिवार जीडिपल्ली से पलायन करके यापालागूडेम जा बसा था.

2002 में ही कामरेड सीताबाई ने पेशेवर क्रांतिकारी होने की अपनी आकांक्षा को पार्टी के सामने रखा था. पर्याप्त उम्र न होने की वजह से पार्टी ने उनके प्रस्ताव को नकारा था. उसके बाद कामरेड सीताबाई गांव के आदिवासी महिला संगठन में काम किया. 2011 के बाद तुडुम देब्बा नामक संगठन के नेतृत्व में आदिवासी महिला संघर्ष समिति में काम किया.

आजीविका के लिए उन्होंने असंगठित क्षेत्र में मजदूर बनीं. वह साथी मजदूरों को संघर्ष के बारे में बताते हुए उनमें उत्साह जगाती थीं. इस तरह उन्होंने मजदूरों का विश्वास जीता. भूमि कब्जा संघर्ष व जन प्रतिरोध में भी उनकी भूमिका थी. पुलिस व वन विभाग के जुल्म के खिलाफ महिलाओं के एकजुट करके उन्होंने संघर्ष का नेतृत्व किया.

2013 में पार्टी से संपर्क साधने की ठान कर कामरेड सीताबाई गढ़चिरौली के एक गांव में आकर वहां से पार्टी के संपर्क में आईं.

इस तरह क्रांति का सपना संजोए कामरेड सीताबाई कल्लेडा पुलिस हमले में शहीद हुई.

कामरेड सीताबाई अमर रहें!

सपनों को कसकर पकड़ रखो
क्योंकि अगर सपने मर गये
तो जीवन है टूटे परों वाली एक चिड़िया
जो उड़ नहीं सकती.
सपनों को कसकर पकड़ रखो
क्योंकि सपनों के बग़ैर
जीवन है एक बंजर खेत
बर्फ़ से ढँका हुआ.

– लैंग्सटन ह्यूज
(अमेरिकी अश्वेत कवि)

(आखिरी पेज से...)

दाडाबोइना स्वामी (प्रभाकर)

तेलंगाना राज्य, वारंगल जिला, रामपेटा गांव के मांकालम्मा और मेट्टु रामुलु दंपति की तीन संतानों में कामरेड स्वामी सबसे छोटे थे. शहादत के समय वे 53 वर्ष के थे. उन्होंने काकातीया विश्वविद्यालय से बीकाम और बीईडी की पढ़ाई की. छात्र अवस्था में ही रैडिकल छात्र संगठन और रैडिकल युवा संगठन के साथ उन्होंने रिश्ता बना लिया. अपने गांव में रैडिकल युवा संगठन का गठन करके उन्होंने उसका नेतृत्व किया. गांव में अध्ययन केंद्र का निर्माण करके क्रांतिकारी राजनीति को फैलाया. विद्या वलंटीर के तौर पर काम करते हुए न सिर्फ बच्चों बल्कि बड़ों को भी पढ़ाते थे.

1985 से लेकर 2000 तक सार्वजनिक जीवन में रहते हुए उन्होंने क्रांति के लिए अपनी अनमोल सेवाएं दी. 1990–93 के बीच में उन्होंने कोरियर की जिम्मेदारी निभाई. बाद में जन संगठनों में काम किया. उसी वक्त उन्हें शिक्षक के रूप में सरकारी नौकरी भी मिली थी. लेकिन दिन–ब–दिन बढ़ते दमन की वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ कर 2001 में भूमिगत हो गए.

कामरेड प्रभाकर के मां–बाप ने अपने बेटे को क्रांति में आगे बढ़ने से रोकने के मकसद से उनकी शादी की थी. लेकिन उनके क्रांतिकारी संकल्प को कमजोर करने में शादी नाकाम रही. भूमिगत होने के बाद भी अपने वैवाहिक संबंध को बनाए रखने के लिए कामरेड प्रभाकर ने कोशिश की. हालांकि उनकी पत्नी इसके लिए तैयार नहीं थीं, इस तरह उनकी शादी का विच्छेद हुआ. बाद में कामरेड प्रभाकर ने शादी नहीं की.

2001 में मैदानी इलाके में 1 + 2 टीमों में उन्होंने काम किया. उस समय बड़ी तादाद में मुठभेड़ें हुई थीं. दमन के चलते आत्मसमर्पण भी बढ़ गए. इसके बावजूद वे क्रांति की राह पर अडिग रहे.

2003 से 2009 तक उन्होंने वरंगल जिले के जनगाम क्षेत्र का सांगठनिक दयित्व निभाया. 2006 में तीन लोगों के साथ गठित मैदानी कमेटी में कामरेड प्रभाकर भी एक सदस्य थे. मैदानी क्षेत्र में प्रतिकूलताएं बढ़ने की वजह से आत्मगत ताकतें घट कर आखिरकार वे अकेले बच गए. इसके चलते डिविजन कमेटी ने 2009 में मैदानी ऑर्गनाइजेशन को रद्द किया. उसके बाद एक साल तक उन्होंने एटूर नागारम–महादेवपुर एरिया कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी निभाई. 2010 में उन्हें जिला कमेटी सदस्य की पदोन्नति दी गई. उसी वर्ष आखिरी में उनका तबादला सीआरबी प्रेस में हुआ था. शहादत तक वे वहीं पर अपना योगदान देते रहे. सीआरबी द्वारा संचालित 'क्रांति' पत्रिका में उनका योगदान था. एक वर्ष के लिए उन्होंने 'क्रांति' पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में काम किया. जरूरतों के मुताबिक उन्होंने कंप्यूटर संबंधित कई काम सीख लिए. क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार सही समय पर काम निपटाने के लिए वे दिन–रात मेहनत किया करते थे.

साहित्य के अध्ययन के अलावा वरिष्ठ कामरेडों के साथ बातचीत करते हुए वे अपनी राजनीतिक चेतना व सैद्धांतिक ज्ञान को विकसित करते थे.

वे एक अनुसाशित, सीधा–सादा कामरेड थे. मित और मृदुभाषी थे. सभी लोगों के साथ आत्मीय संबंध रखते थे. न सिर्फ बड़े बल्कि कम उम्र के कामरेडों के साथ भी वे विनम्रता के साथ पेश आते थे. अपने आदर्श व्यवहार का परिचय देते हुए उन्होंने तेलंगाना, दंडकारण्य और एओबी कामरेडों पर अमिट छाप छोड़ी. क्रांतिकारी आंदोलन ने एक मूल्यवान कामरेड को खोया.

कामरेड प्रभाकर अमर रहें!

कामरेड पोडियम बामन (मल्लेश)

कामरेड पोडियम बामन (मल्लेश) माड़ डिविजन, इंद्रावति क्षेत्र के डुंगा गांव में लगभग 28 साल पहले पैदा हुए थे. बाल संगठन के जरिए उनके क्रांतिकारी सफर की शुरूआत हुई थी. बाल संगठन के कमांडर का जिम्मा उन्होंने संभाला. जवान होने के बाद वे जीआरडी में भर्ती हुए. सलवा जुडुम का सामना करने में उनकी भागीदारी थी. कई सलवा जुडुम नेताओं के खात्मे में उन्होंने भाग लिया.

अपने एरिया में घुसने वाले पुलिस बलों पर मिलिशिया द्वारा किए गए कई हमलों में वे सक्रिय भागीदार थे. पीएलजीए के प्राथमिक व द्वितीय बलों के साथ मिल कर भी उन्होंने कई सैनिक वारदातों में भाग लिया.

2005 में कामरेड मल्लेश पूर्णकालिक गुरिल्ला बने. लगभग एक वर्ष तक उन्होंने इंद्रावती क्षेत्र में ही काम किया. 2007 में उनका तबादला नव गठित सीआरसी की कंपनी–1, जो एओबी में कार्यरत है, में हुआ था. उसमें काम करते हुए उन्होंने नयागढ़ के अलावा कई सैनिक कार्यवाहियों में भाग लिया. बाद में दंडकारण्य और तेलंगाना सीमा पर जब सीआरसी की कंपनी–2 का गठन हुआ था, तब उनका

तबादला उस में हुआ था. उन्होंने सेक्शन डिप्यूटी कमांडर की हैसियत से उसमें शामिल हुआ.

बंडा एंबुश, नाल्को रेइड, मुकरम एंबुश, झीरमघाटी एंबुश सहित कइयों सैनिक कार्यवाहियों में सक्रिय रूप से शामिल होते हुए सेक्शन कमांडर के रूप में वे विकसित हुए.

कामरेड मल्लेश का वैवाहिक जीवन भी आदर्श रहा. 2010 में उनकी शादी इसी कंपनी में कार्यरत कामरेड रत्ना, जो इसी वारदात में शहीद हुई, के साथ हुई थी. शादी होने के कुछ ही दिनों में ओडिशा राज्य में कामरेड रत्ना की गिरफ्तारी हुई थी. वह साढ़े चार साल तक जेल में रहीं. कामरेड मल्लेश आदर्श व सहन के साथ कामरेड रत्ना का इंतजार किया.

2 मार्च को दुश्मन द्वारा किए गए हमले का डट कर सामना करते हुए उन्होंने न सिर्फ पुलिस को आगे बढ़ने से रोक दिया बल्कि तीन ग्रेहउंड्स जवानों को गंभीर रूप से घायल किया. नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा को सर्वोच्च महत्व देते हुए उन्होंने अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड मल्लेश अमर रहें!

कामरेड पूनेम जोगाल

कामरेड पूनेम जोगाल बीजापुर जिला, ऊसूर ब्लॉक के ऊरनार गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में 26 वर्ष पहले पैदा हुए थे. बचपन में ही बीमारी के रूप में मृत्यु ने उनसे उनके मां–बाप को दूर किया. उनकी एक बड़ी बहन और दो छोटे भाई हैं.

पहले बाल संगठन में, उसके बाद सीएनएम में कामरेड जोगाल ने अपना योगदान दिया. 2006 में पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर वे पीएलजीए में भर्ती हो गए. बाद में उनकी नियुक्ति सीआरसी की कंपनी–1 में हुई थी. 2008 में उनका तबादला सीआरसी की कंपनी–2 में हुआ था. बीच में दो वर्ष को छोड़ कर शहादत तक वे वहीं पर कार्यरत थे. दो वर्ष के लिए उन्होंने एक नेतृत्वकारी कामरेड की सुरक्षा टीम के कमांडर की जिम्मेदारी निभाई.

बंडा एंबुश, नयागढ़ रेइड, मुकरम और झीरमघाटी एंबुश सहित कई सैनिक कार्यवाहियों में उनकी भागीदारी थी. 2013 की आखिरी में उन्हें सेक्शन डिप्यूटी की जिम्मेदारी सौंपी गई. 2016 में आयोजित कंपनी की दूसरी प्लीनम में वे सेक्शन कमांडर चुने गए.

2014 में उसी कंपनी में कार्यरत कामरेड के साथ उनकी शादी हुई थी.

अपनी राजनीतिक चेतना को विकसित करने के लिए वे निरंतर कोशिश करते थे. सैनिक क्षेत्र में कार्यरत होने के बावजूद वह जनता के साथ घुलमिल जाते थे. सैनिक कार्यवाही के लिए वे जिस इलाके में जाते, वहां की भाषा सीख कर जनता में राजनीतिक प्रचार करने की कोशिश करते थे.

अपनी आखरी लड़ाई में कामरेड जोगाल दुश्मन के साथ डट कर लड़े थे. उनकी बंदूक से निकली गोली से पुलिस का एक जवान मारा गया.

कामरेड जोगाल अमर रहें!

कामरेड सोडी पांडे (रामे)

सुकमा जिला, कोंटा ब्लॉक के वीरापुरम गांव के एक मध्यम वर्गीय खेत परिवार में कामरेड रामे का जन्म हुआ था. बचपन में बाल संगठन, जवान होने के बाद मिलिशिया, उसके बाद केएएमएस में काम करते हुए उन्होंने क्रांति के लिए अपना योगदान दिया. उसी क्रम में अपनी चेतना को बढ़ाते हुए क्रांति के लिए अपनी पूरी जिंदगी को समर्पित करने के मकसद से 2006 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में गोल्लापल्ली एलओएस में भर्ती हुई थीं. बाद में कुछ ही वक्त के लिए पलटन–8 में काम किया. 2007 में उसका तबादला सीआरसी की कंपनी–1 में, 2008 में सीआरसी की कंपनी–2 में हुआ था. 2012 में कामरेड रामे को पीपीसी में लिया गया. पीपीसी सदस्या की हैसियत से उन्हें डाक्टर की जिम्मेदारी दी गई.

नयागढ़ रेइड, बंडा एंबुश, दामनजोडी रेइड, जप्पूर ऑपर्च्यनिटी एंबुश, डइगूडा एंबुश आदि कई सैनिक कार्यवाहियों में उन्होंने भाग लिया.

2010 में अपने साथ काम करने वाले के साथ कामरेड रामे की शादी हुई थी. लेकिन 2017 में उनका जीवनसाथी पार्टी छोड़ कर भाग गया था. इसके बावजूद कामरेड रामे क्रांति में डटी रहीं. जनवरी 2018 में उन्हें सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी दी गई.

कामरेड रामे डॉक्टर जिम्मेदारी के साथ–साथ सैनिक कार्यवाहियों में भी सक्रिय रूप में भाग लेती थीं. वह जिस किसी भी क्षेत्र में जाती थीं, उस क्षेत्र की भाषा सीखती थीं. जनता को वैद्य सेवाएं देकर उनका मन जीत लेती थी.

कामरेड रामे अमर रहें!

कामरेड कुहडम कोसी

सुकमा जिला, कोंटा ब्लॉक के रंगाई गूडेम में कामरेड कुहडम कोसी का जन्म हुआ था. मां–बाप की चार संतानों में वह सबसे छोटी थीं. कामरेड कोसी ने बचपन में ही अपने पिता को खोया.

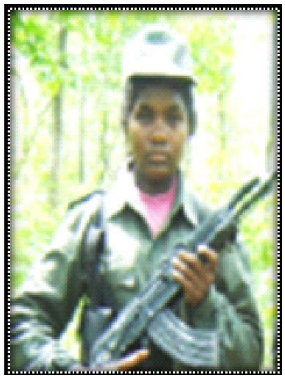

कामरेड कोसी ने पहले बाल संगठन में काम किया. बाद में मिलिशिया में भर्ती हुईं. 2007 में पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. कुछ वक्त डीवीसी दस्ते में काम करने के बाद 2008 में सीआरसी की कंपनी–2 में वह स्थानांतरित की गईं. वहां दो साल तक गार्ड के तौर पर उन्होंने अपना योगदान दिया. 2013 से 2016 तक क्रांतिकारी जरूरतों के अनुसार उन्होंने ओडिशा राज्य में काम किया. 2018 जनवरी में उन्हें पीपीसीएम की पदोन्नति देकर सेक्शन डिप्युटी की जिम्मेदारी सौंपी गई.

बंडा एंबुश, दामनजोडी रेइड, डइगूडा एंबुश, कुर्नापल्ली एंबुश में कामरेड कोसी ने भाग लिया. एओबी के नारायणपट्ना जमीन आंदोलन में उन्होंने अपनी कंपनी के साथ भाग लिया. दुश्मन के ऊपर हमलों के अलावा दुश्मन द्वारा किए गए हमलों का भी उन्होंने डट कर सामना किया. मिलिटरी बारीकियों को सीखने पर वह ध्यान देती थीं.

वह जिस क्षेत्र में जाती, उस क्षेत्र की भाषाएं सीख कर जनता में राजनीतिक प्रचार किया करती थीं. वहां के भूभाग पर पकड़ हासिल करती थीं.

कामरेड कोसी अमर रहें!

कामरेड कुम्मा (संगीता)

पश्चिम बस्तर डिविजन, बीजापुर जिला, नेशनल पार्क इलाके के मूकावेल्ली गांव में कामरेड कुम्मा (संगीता) पैदा हुई थीं. कामरेड संगीता की मां, तीन भाई और एक छोटी बहन है. संगीता के बचपन में ही उस परिवार पर से बाप का साया उठ गया.

मिलिशिया में काम करते हुए 2009 में कामरेड संगीता पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. कुछ वक्त तक नेशनल पार्क दस्ते में काम करने के बाद उनका तबादला उत्तर तेलंगाना में हुआ था. कुछ वक्त तक वह तत्कालीन राज्य कमेटी के सचिव की गार्ड रहीं. 2011 में इंद्रावेल्ली दस्ते में और 2017 में खम्मम एलजीएस में उन्होंने काम किया. उन्हें 2011 में पर्टी सदस्यता और 2015 में एसी सदस्यता दी गई. 2012 में उनकी शादी हुई थी.

2012 में सिंगम गांव के पास, 2013 में तेलंगाना–महाराष्ट्र की सीम से सटे लंकाचेनु गांव के पास, 2014 में नेशनल पार्क एरिया के गुंडम और पेदाकांकेर गांवों के नजदीक दुश्मन द्वारा किए गए हमलों का मुकाबला करते हुए उन्होंने नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाया. दुश्मन पर किए गए कई एंबुशों में कामरेड संगीता की भागीदारी थी.

अपनी आखिरी जंग में कामरेड संगीता ने नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाने के मकसद से अपनी जान की जरा भी परवाह किए बगैर दुश्मन के साथ डट कर लड़ा था. उस कोशिश में शहादत को पाया.

कामरेड संगीता अमर रहें!

कामरेड तेल्लम रामे (रत्ना)

पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया के काकेकोर्मा गांव के गरीब आदिवासी परिवार में कामरेड तेल्लम रामे (रत्ना) पैदा हुई थीं.

गांव में रहते समय पहले बाल संगठन में बाद में मिलिशिया और केएएमएस में काम करते हुए कामरेड रत्ना ने न सिर्फ क्रांति की सेवा की बल्कि अपनी राजनीतिक चेतना को भी विकसित किया. 2004 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनीं. उसके बाद वह नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा पलटन में सदस्य रहीं. 2009 में सीआरसी की कंपनी–2 में उनका तबादला हुआ था. 2010 में उनकी शादी कामरेड मल्लेश जो इसी घटना में शहीद हुए, के साथ हुई थी. दामनजोडी रेइड और मुकरम एंबुश में कामरेड रत्ना ने भाग लिया. 2011 में जब एक सैनिक कार्रवाई के लिए ओडिशा गई थीं, ओडिशा पुलिस द्वारा उनकी गिरफ्तारी हुई. पुलिस द्वारा दी गई कई यातनाओं के बावजूद उन्होंने पार्टी की गुप्तता का खुलासा नहीं किया. साढ़े चार साल तक उनकी जिंदगी जेल में गुजरी. अपने इलाके से दूर, अन्य भाषाई प्रांत में जेल जिंदगी बिताना किसी के लिए भी एक कठिन परीक्षा समान है. आदिवासी क्षेत्र में पले–बढ़े लोगों के लिए तो और भी कठिन है. कामरेड रत्ना क्रांतिकारी चेतना के साथ उस कठिन समय को पार किया. जेल में कपड़ा सिलाई सीख कर उन्होंने अपनी आर्थिक जरूरतों को निपटा लिया.

जेल से छूटने के तुरंत बाद वह अपनी ही कंपनी में

शामिल हुई. सैनिक प्रशिक्षण के जरिए कामरेड रत्ना ने अपनी मिलिटरी क्षमता को बढ़ाया. गुरिल्ला बनने के बाद ही कामरेड रत्ना ने पढ़ाई हासिल की. वह अपनी राजनीतिक चेतना बढ़ाने पर ध्यान देती थीं. सभी लोगों के साथ घुलमिलकर रहती थीं. एक आदर्श क्रांतिकारी जोड़ी – कामरेड रत्ना और कामरेड मल्लेश ने जनता की सेवा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया.

कामरेड रत्ना अमर रहें!

कामरेड उंडम जोगी (ललिता)

सुकमा जिला, कोंटा ब्लॉक के बिकिडम गांव में 17 वर्ष पहले कामरेड उंडम जोगी (ललिता) का जन्म हुआ. मां–बाप की तीन संतानों में इकलौती व सबसे छोटी बेटी थी, वह. बचपन में ही उनके सिर से पिता का साया उठ चुका था. मां और भाइयों ने लाड़–प्यार से उनकी परवरिश की.

कामरेड ललिता ने पहले बाल संगठन में, बाद में मिलिशिया में काम किया. सितंबर, 2016 में पेशेवर कार्यकर्ता बन कर सीआरसी की कंपनी–2 में शामिल हुई थी. हालांकि उसके बाद ज्यादा वक्त उन्होंने क्रांति में अपना योगदान नहीं दे पाया. लेकिन भारत के क्रांतिकारी इतिहास में उनकी कुरबानी हमेशा याद रहेगी.

कामरेड ललिता अमर रहें!

कामरेड हेमला पायकी (ललिता)

पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगालूर एरिया के सावनार गांव में कामरेड हेमला पायकी (ललिता) ने जन्म लिया. लच्ची और हेमला कोय्याल की प्रथम संतान थी वह. उनका एक छोटा भाई है. बचपन में ही मृत्य ने मां की ममता से उन्हें वंचित कर दिया. मां के निधन के बाद उनकी चाची व चाचा ने उनका पालन–पोषन किया था.

कामरेड ललिता ने पहले सीएनएम में काम किया. 2013 दिसंबर में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के तौर पर पीएलजीए में उनकी भर्ती हुई. 2014 में उनका तबादला नेतृत्वकारी कामरेडों की सुरक्षा टीम में हुआ था.

गुरिल्ला बनने के बाद ही उन्होंने पढ़ाई हासिल की. वह डॉक्टर, संतरी आदि जिम्मेदारियां सहनशीलता के साथ निभाती थी. वह अन्य कामरेड्स व जनता के साथ विनम्रता से पेश आती थीं. पीएलजीए ने एक अनुशासित, मेहनती, समर्पित युवा गुरिल्ला को खोया.

कामरेड ललिता अमर रहें!

कामरेड माडवी शांति (सोनी)

पश्चिम बस्तर डिविजन, भैरमगढ़ क्षेत्र के टेंडोड गांव के आदिवासी परिवार में कामरेड शांति की पैदाइश हुई थी. वह मां–बाप की पहली संतान थी. शांति की एक छोटी बहन है.

घर में रहते समय कामरेड शांति ने जन संगठन में काम किया. 18 वर्ष की होने के बाद दिसंबर, 2012 में पेशेवर क्रांतिकारी के तौर पर पीएलजीए में भर्ती हुई थीं. कुछ समय उन्होंने अपने ही एरिया के सप्लाई दस्ते में काम किया. उसके बाद उनका स्थानांतरण सीओबी में हुआ था. वहां कंदमाल डिविजन में उन्होंने काम किया. 2014 में एक नेतृत्वकारी कामरेड की सुरक्षा टीम में शामिल हुई.

कामरेड सोनी 2016 फरवरी में कंदामाल जिले के डोडाजोडी गांव के पास हुई मुठभेड़ और मई 2016 में कलहंडी जिले के बोदबेडा गांव के पास दुश्मन द्वारा किए गए हमले का मुकाबला किया.

जनता के प्रति उनका विश्वास अटूट था. न सिर्फ राजनीति बताकर बल्कि नाच–गाने के जरिए वह क्रांतिकारी रास्ते के प्रति जनता में विश्वास बढ़ाती थीं. वह जहां जाती वहां के भूभाग पर पकड़ हासिल करती थीं. कामरेड सोनी ने नेतृत्वकारी कामरेडों को बचाने के लिए दुश्मन के साथ हिम्मत से लड़ते हुए अपनी जान की कुरबानी दी.

कामरेड सोनी अमर रहें!

जहां कहीं भी संघर्ष होता है वहां कुरबानी करनी पड़ती है और मौत एक आम घटना बन जाती है. लेकिन हमारे दिलों में जनता का हित और लोगों की भारी बहुसंख्या की तकलीफें मौजूद हैं, तथा जब हम जनता के लिए कुरबान हो जाते हैं तो यह एक शानदार मौत होती है. फिर भी हमें गैरजरूरी कुरबानियों से बचने की भरसक कोशिश करनी चाहिए.

– कामरेड माओ

कल्लेडा शहीदों को लाल–लाल सलाम!

आयतू चंदू विमला अखिला करण सरिता शैला सीताबाई

गढ़चिरौली जिले के कल्लेड़ा गांव के नजदीक के जंगल में जब कुछ गुरिल्ला कामरेड्स ठहरे थे, उसी गांव में तैनात अपनी खुफिया तंत्र द्वारा इसकी सूचना पाने वाले महाराष्ट्र के सी–60 कमांडो बल रातों–रात घात लगा कर बैठे थे. अगले दिन यानी 6 दिसंबर 2017 की सुबह 6.30 बजे को पहाड़ उतर कर आने वाले गुरिल्ला योद्धाओं को उन्होंने अपने जाल में फंसा कर घातक हमला किया. उस हमले का डटकर प्रतिरोध करते हुए अहेरी एरिया कमेटी के सचिव कामरेड अशोक पेंदाम (आयतू), अहेरी एरिया कमेटी सदस्य कामरेड केशव पल्लो (चंदू), प्लाटून–14 की सदस्या कामरेड महरी आत्रम (अखिला), कामरेड कमला वड्डे (सरिता) एवं कामरेड शैला कोवासी, तेलंगाना में कार्यरत कामरेड्स कोरसा मुन्नी (विमला), पूनेम सोमडू (रामू, करण) एवं सिडाम सीताबाई ने शहादत को पाया. नव जनवादी क्रांति, जो जोतने वाले को जमीन, जल–जंगल–जमीन पर आदिवासियों के जन्मजात अधिकार की गारंटी देती है, को सफल बनाने के लक्ष्य से अपनी जान की कुरबानी देने वाले इन वीरयोद्धाओं को नम आंखो से श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे. उनके द्वारा स्थापित आदर्शों को ऊंचा उठाएंगे. अमर शहीदों के सपनों को साकार बनाने के लिए उनके रास्ते पर आगे बढ़ाएंगे.

आएं! उन शहीदों के बारे में जानेंगे!

(शेष पेज 27 में...)

तडपाला अमर शहीदों को लाल–लाल सलाम!

स्वामी बामन जोगाल पांडे कोसी प्रमीला रामे पायकी जोगी

अपने मुखबिर तंत्र की सूचना पाकर, 2 मार्च, 2018 को कर्रे गुट्टालु (जिसका अर्थ है, काले पहाड़) में स्थित तडपाला गांव के पास संचालित एक गुरिल्ला शिविर का घेराव कर दुश्मन ने एक बड़ा हमला किया. इस हमले का डट कर मुकाबला करते हुए नेतृत्व को बचाते हुए 10 जन कामरेडों ने अपनी जान की कुरबानी दी. शहीदों में सीआरबी स्टाफ में कार्यरत डीसी स्तर के कामरेड दाडाबोइना स्वामी (प्रभाकर), सीआरसी की कंपनी–2 के तीन सेक्शन कमांडर्स कामरेड पोड़ियम बामन (मल्लेश), कामरेड पूनेम जोगाल, कामरेड ओड़ी पांडे (रामे); सीआरसी की कंपनी–2 की वीरंगानाएं कामरेड्स कुहडम कोसी, तेल्लम रामे (रत्ना), उंडम जोगी (ललिता), तेलंगाना में कार्यरत कामरेड कुम्मा प्रमीला (संगीता), नेतृत्व की सुरक्षा टीम मे कार्यरत कामरेड माड़वी शांति (सोनी), कामरेड हेमला पायकी (ललिता) शामिल हैं.

शहीदों के परिजन व मित्रगण संघर्ष करके इन सभी कामरेडों की लाशों को उनके गृहगांव ले गए. क्रांतिकारी परंपराओं के अनुसार उनके अंतिम संस्कार किए गए. न सिर्फ शहीदों के गांवों बल्कि तेलंगाना व दंडकारण्य के कई जगहों में आयोजित स्मारक सभाओं में उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की गई. इन सभी कामरेडों के आदर्शों को ऊंचा उठाएंगे.

(शेष पेज 30 में...)